पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2020-2022

ओ३म्

शृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२४, अंकः-४, अक्टूबर, सन्-२०२१, सं०-२०७७वि०, दयानंदाब्द १६७, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,१२१; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

विजयादशमी पर विशेष

श्रीराम का जीवन राजनीतिक कुशलता और नैतिकता का स्वर्णिम उदाहरण है !

सात्विक गुणों के वह सदैव पक्षधर रहे

-पं.शिव कुमार शास्त्री (पूर्व संसद सदस्य)-

बाली के पथभ्रष्ट होने के कारण राम उसके शत्रु बने। सुग्रीव के ऊपर राम के अतिशय प्रेम के कारण सुग्रीव के शोषित-पीड़ित होने के साथ-साथ उसकी सदायशता भी है। राम का सुग्रीव पर कितना अनुराग था, इसके लिए लंका के युद्ध के समय का एक उदाहरण देखिये-

सेतु से वानर-सेना के समुद्र-पार उतरने पर सुग्रीव लंका को देखने की इच्छा से सुबेल पर्वत पर चढ़ गया। वहाँ सुबेल के एक शिखर से लंका में घूमते हुए रावण को देखा। रावण को देखते हुए सुग्रीव आगबबूला हो गया और अपने-आपको सम्भाल न सका। वह छलांग लगाकर रावण के पास पहुँच गया और उसके साथ कुछ देर तक युद्ध करके और अपनी वीरता की धाक जमाकर वापस आ गया।

राम चिन्तित होकर इस सारे दृश्य को देखते रहे और सुग्रीव के वापस आने पर भावावेश में कहने लगे-

असम्मन्त्र्य मया सार्धं तविदं साहसं कृतम्।
एवं साहसकर्माणिक न कुर्वन्ति जनेश्वराः॥

-मेरे साथ बिना परामर्श किये ही यह जो तुमने साहसिक कार्य किया, इस प्रकार का साहस राजा लोगों को नहीं करना चाहिए।

इदानीं मा कृथा वीर! एवं विधिमचिन्तितम्।
त्वयि किंचित् समापन्ने किं कार्यं सीतया मम॥

-हे वीर! इस प्रकार बिना विचार किये आगे से दुःसाहस मत करना! यदि तुम्हें कुछ हो जाता तो फिर सीता से मुझे क्या मतलब था?

भरतेन महाबाहो लक्ष्मणेन यवीयसा।
शत्रुघ्नेन च शत्रुघ्न स्वशरीरेण वा पुनः॥

-हे महाबाहु सुग्रीव! फिर भरत से, लक्ष्मण से और छोटे भाई शत्रुघ्न से और अपने शरीर से भी क्या प्रयोजन रह जाता?

त्वयि चानागते पूर्वमिति मे निश्चिता मतिः।
जानतश्चापि ते वीर्यं महेन्द्रवरुणोपमम्॥

-मैंने यह निश्चय कर लिया था कि यदि तुम सकुशल वापस न आ सके तो- यद्यपि महेन्द्र और वरुण के समान मैं तुम्हारे पराक्रम से परिचित हूँ, फिर भी-

हत्वाहं रावणं युद्धे सुपुत्रबलवाहनम्।
अभिषिच्य च लंकायां विभषणमथापि च॥
भरते राज्यमावेश्य त्यक्ष्ये देहं महाबल॥

-मैंने निश्चय किया था कि सेना और पुत्रों-सहित रावण को युद्ध में मार कर और लंका में विभीषण का राजतिलक करके तथा अयोध्या का राज्य भरत को देकर मैं अपने शरीर का परित्याग कर दूँगा।

ये राम के उद्गार कितने स्नेह से सराबोर हैं। जिस व्यक्ति के आचरण से प्रभावित होकर उसे ऐसे सहयोगी मिल जावें, वह दूसरों से मार कैसे खा सकता है?

राम विभीषण के पक्षधर भी उसके सात्विक गुणों के कारण ही बने। रावण से अपमानित होकर जब विभीषण राम के दल में (राम से मिलने) आया तो राम को छोड़कर शेष सबकी सम्मति यह थी कि यह शत्रु का भाई है, अधिक सम्भावना यह है कि यह हमारे छिद्र जानने आया होगा, किन्तु राम इन विचारों से सहमत नहीं हैं। वे कहते हैं कि बिना मिले यह कैसे जाना जा सकता है कि उसके मन में क्या बात है? अब साथियों ने इस पर भी प्रश्न किया कि मिलकर भी मन के अन्दर की बात कैसे जानी जा सकती है? ऊपर-ऊपर से चिकनी-चुपड़ी बातें करता रहेगा और मन में घात बनाए रक्खेगा। तब राम ने जो उत्तर दिया वह उस महापुरुष की योग्यता को बताता है कि वे मनुष्यों के कितने पारखी थे। राम ने कहा-

आकारश्छाद्यमानोऽपि न शक्यो विनिगूहितम्।
बलाद्धि विवृणोत्येव भावमन्तर्गतं नृणाम्॥

'मनुष्य अपने आकार को छिपाने की कोशिश करने पर भी नहीं छिपा सकता, क्योंकि अन्दर के विचार बलपूर्वक आकर

आकृति पर प्रकट होते रहते हैं।' यह मनोवैज्ञानिक बात उर्दू के शायर जिगर ने भी कही है-

'जिगर' मैंने छिपाया लाख अपना दर्दोगम लेकिन,
बयाँ कर दीं मेरी सूरत ने सब कैफ़ीयते दिल की।।

राम विभीषण से मिले। अभिवादन के पश्चात् हाथ पकड़कर कहा- आओ लंकेश! बैठो! जब साथियों ने कहा कि ये लंकेश नहीं, उसके भाई हैं, तो राम ने उत्तर दिया- मैंने सोच-समझकर ही लंकेश सम्बोधन का प्रयोग किया है। अमर्यादित और चरित्रहीन व्यक्ति को राज्य करने का कोई अधिकार नहीं होता, अतः आज से हमारी दृष्टि में लंका के सिंहासन का अधिकारी रावण नहीं, बल्कि विभीषण है।

राम का यह मात्र सौजन्य का प्रकाश नहीं था, अपितु नीति का एक कुशल प्रयोग था। राम विभीषण पर अपने कथन की प्रतिक्रिया देखना चाहते थे और इसी पर उसकी वास्तविक भावना जानी जा सकती थी। विभीषण के ऊपर उस नीति-प्रयोग का प्रभाव हुआ और कहने लगा कि मैं अपने भाई रावण के दुराचरणों से तंग आ गया हूँ। उसे किसी भले काम का परामर्श रुचिकर नहीं होता, अतः इस अनाचार से प्रजा को बचाने के लिए और रावण के विनाश के लिए मैं आपके सहयोग में अपनी पूरी शक्ति और योग्यता व्यय कर दूँगा।

राम की इस प्रतिक्रिया से बहुत सन्तुष्ट हुए और दोनों ओर से ही वचनों का पालन बड़ी ईमानदारी से किया गया।

युद्ध में लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम ने दुःखी होकर जो उद्गार व्यक्त किये, उनमें विभीषण का राजतिलक भी सम्मिलित था।

रावण के मरने पर विभीषण जब दुःखी हुआ, तब भी राम ने बड़ी सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहा-

मरणान्तानि वैराणि निवृत्तं नः प्रयोजनम्।
क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव॥

हे आर्य विभीषण! 'मृत्यु के साथ वैर का अन्त हो जाता है। हमारा उद्देश्य भी पूरा हो गया। आओ अब मिलकर इसका अन्तिम संस्कार करें। यह जैसा तुम्हारा भाई है, वैसा मेरा भी है।'

बाली ने मरते समय राम से अपने पुत्र अंगद के संरक्षण की प्रार्थना की थी और राम ने भी इसे स्वीकार करके पुत्रवत् स्नेह वरतने का वचन दिया था। राम ने अपने इस वचन को आजीवन निभाया। अंगद के पितृ-प्रतिशोध की भावना और राम की राजनैतिक कुशलता तथा नैतिकता का एक आकर्षक दृश्य 'हनुमन्नाटक' के रचयिता ने उपस्थित किया है।

लंका के युद्ध में रावण के मरने पर राम की सेना में जब विजय के बाजे बजने लगे तो अचानक एक अप्रत्याशित दृश्य उपस्थित हो गया। राम की सेना का एक विश्वस्त और अनुशासित योद्धा अंगद ओज और आवेश में भरा हुआ राम के आगे आकर बोला-'ये विजय के बाजे बन्द कर दिये जावें। यह विजय अधूरी है। क्या यह भी निश्चित है कि

(शेष पृष्ठ 3 पर)

विनय पीयूष

प्रार्थना

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव।।

(यजु. 30/3)

देव सविता !
दुरित जन से, दुरित मन से,
दुरित अनृत आचरण से
कीजिए अति दूर हमको !

देव सविता !
भद्र जन से, भद्र मन से,
भद्र अमृत आचरण से
कीजिए भरपूर हमको !

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

वेदमंत्रों के काव्यानुवादक

राष्ट्रभाषा परिषद बाराबंकी के तत्वावधान में स्व.उमेश राही के संचालन एवं मेरी अध्यक्षता में आयोजित एक कविसम्मेलन के मंच पर (१९७८) एक से एक कविगण काव्यपाठ कर रहे थे। एक नीरस और उबाऊ माहौल में अचानक एक मधुर स्वरलहरी सुनाई दी- एक गीत की पंक्ति और उस स्वर ने मेरा ध्यान आकृष्ट किया-

अब क्या और पढ़ूँ रे पण्डित!
और गुनूँ क्या रे ज्ञानी!
'ढाई आखर' पढ़ने की मन
कर बैठा है नादानी!

इन पंक्तियों को मैं आजतक भुला नहीं पाया क्योंकि यह पंक्तियाँ किसी सच्चे और सधे हुए कवि के कंठ से प्रस्फुटित हो रही थीं। पता चला- इस कवि का नाम है- अमृत खरे। उस समय तक अमृत खरे बाराबंकी में थे और फिर वे लखनऊ चले आये। बैंक आफ बड़ौदा में उनका चयन हो गया था और वे उक्त बैंक की हजरतगंज स्थित मुख्य शाखा में आ गये थे। वहीं अमृत जी से मेरी प्रथम वार्ता हुई। उनकी आत्मीयता, उनका स्नेह, आदरपूर्ण व्यवहार मुझे उनके सन्निकट ले आया। पता चला कि अमृत जी का चयन जब बैंक आफ बड़ौदा में हुआ, उन्हीं दिनों उनका चयन देश के सर्वाधिक चर्चित और प्रतिष्ठित टाइम्स आफ इण्डिया के सम्पादकीय विभाग के लिए भी हो गया था। दोनों में से किसे चुना जाय, यह असमंजस अमृत जी के मन में था। पत्रकारिता और लेखन उनका प्रिय विषय और व्यसन था- किन्तु इस क्षेत्र में अस्थिरता थी और ध्यान देने पर उन्होंने बैंक आफ बड़ौदा ही चुना किन्तु पत्रकारिता का व्यामोह उनके मन में व्याप्त रहा। ऐसे सुयोग्य लेखक कवि और गीतकार से आत्मीयता पूर्ण वार्तालाप ने मुझे प्रोत्साहित किया। इस वार्ता में अमृत जी ने वैदिक साहित्य में अपनी अभिरुचि प्रदर्शित की। फलतः उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के सभी ग्रंथ, वेदभाष्य आदि का अध्ययन किया। यह वेदमंत्रों के प्रति बढ़ता प्रेम ही था कि उन्होंने एक दिन एक वेदमंत्र का अतिसुन्दर काव्यानुवाद मुझे सुनाया- जिससे मेरा मन पुलकित हो उठा क्योंकि इतना सुंदर वेदमंत्र का काव्यानुवाद इससे पूर्व मैंने सुना न था। मैंने निश्चय किया इस काव्यानुवाद को प्रकाश में लाना आवश्यक है। फलतः एक मासिक पत्र के प्रकाशन का निर्णय हमलोगों ने लिया। वैदिक विचारधारा के कई नाम अमृत जी ने सुझाये जिनमें 'आर्य लोक वार्ता' नाम मुझे सर्वाधिक सुंदर लगा। इसका पंजीकरण कराया गया और जुलाई १९९८ में आर्य लोक वार्ता का प्रथम अंक छपा। इसमें प्रथम पृष्ठ पर ही अमृत जी द्वारा रचित 'उपत्वाग्ने दिवे दिवे..' (ऋग्वेद १/१/७ एवं सामवेद १/२/४) के मंत्र का काव्यानुवाद 'विनय पीयूष' स्तम्भ में प्रकाशित हुआ-

शीश झुकाते आते हैं हम !

रात न जानें,
दिवस न जानें;
मास न जानें,
बरस न जानें;

हाथ जोड़, श्रद्धा से भर-भर,
पास तुम्हारे आते हैं हम !

इस काव्यानुवाद के प्रकाशित होने पर सर्वत्र इसकी प्रशंसा होती रही। आज २४ वर्षों से आर्य लोक वार्ता हिन्दी मासिक का एक भी अंक ऐसा नहीं है जिसमें अमृत जी का काव्यानुवाद न हो।

वास्तविकता यह है कि वेदमंत्रों के काव्यानुवाद के नियमित प्रकाशन के लिए ही आर्य लोक वार्ता के प्रकाशन को प्रारम्भ करने का निश्चय हुआ कि वेद की इस पताका की गरिमा बनाये रखने हेतु आर्य लोक वार्ता में कोई विज्ञापन नहीं होगा। इस मर्यादा का अबतक पालन हो रहा है। २४ वर्षों के इतिहास में एक भी विज्ञापन न प्रकाशित करने वाला आर्य लोक वार्ता देश का प्रमुख पत्र है।

भारत के अनेक नगरों, प्रदेशों और विदेशों से प्रशंसा पत्र प्राप्त होने लगे। अष्टाध्यायी व्याकरण के महापंडित स्व.आचार्य ओजोमित्र शास्त्री विद्यावारिधि, तत्कालीन कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या ने लिखा- ऐसा काव्यानुवाद कोई मंत्रद्रष्टा ऋषि ही कर सकता है। बिना मंत्र के अर्थ को आत्मसात किये हुए ऐसी पंक्ति की रचना संभव नहीं। इसी तरह अंग्रेजी साहित्य के प्रोफेसर डॉ.महेश सिंह कुशवाहा ने तो बहुत ही सराहना की। दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, उत्तराखंड, प. बंगाल, मध्यप्रदेश ही नहीं, कर्नाटक और चेन्नई आदि में भी लोग इन अनुवादों के प्रशंसक हैं और उनकी यह निरन्तर मांग बनी हुई है कि इस काव्यानुवाद को पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो। इस पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कार्यकारी प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य, टाण्डा ने यह जानना चाहा है कि अमृत जी किस प्रेस से इसका प्रकाशन कराना चाहते हैं। सभी प्रकार से विचार करके वैदिक विचारधारा के सार्वभौमिक महत्व के प्रसिद्ध प्रतिष्ठित 'राजपाल एंड संस' प्रकाशन दिल्ली के प्रति अमृत जी ने सहमति जतायी। हम सभी की अभिलाषा है कि इसमें वेदमंत्र के काव्यानुवाद के प्रकाशन से महाशय राजपाल की आत्मा को परमशांति और संतोष का अनुभव होगा। श्री आनन्द कुमार आर्य जी ने इस प्रकाशन की वार्ता को आगे बढ़ाने और पूर्ण करने का आश्वासन दिया है, जिसे अवश्य ही राजपाल प्रकाशन के अधिकारीगण स्वीकार करेंगे- जिससे देश विदेश में फैले हुए स्वाध्याशील पाठकों की इच्छा की पूर्ति होगी।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-२१०

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में दशम समुल्लास का अंश

भक्ष्याभक्ष्य

जब तक एक मत, एक हानि लाभ, एक सुख दुःख परस्पर न मानें तब तक उन्नति होना बहुत कठिन है। परन्तु केवल खाना पीना ही एक होने से सुधार नहीं हो सकता किन्तु जब तक बुरी बातें नहीं छोड़ते और अच्छी बातें नहीं करते तब तक बढ़ती के बदले हानि होती है।

विदेशियों के आर्यावर्त्त में राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना; विद्या न पढ़ना पढ़ाना वा बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्या भाषणादि कुलक्षण, वेदविद्या का अप्रचार आदि दुष्कर्म हैं। जब आपस में भाई भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।

क्या तुम लोग महाभारत की बातें जो पांच सहस्र वर्ष के पहिले हुई थीं उनको भी भूल गये? देखो! महाभारत युद्ध में सब लोग लड़ाई में सवारियों पर खाते पीते थे, आपस की फूट से कौरव पांडव और यादवों का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने ये भयंकर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःखसागर में हत्यारे, स्वदेशविनाशक, नीच के दुष्ट मार्ग में आर्य लोग अब तक भी चलकर दुःख बढ़ा रहे हैं। परमेश्वर कृपा करे कि यह राजरोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाय।

भक्ष्याभक्ष्य दो प्रकार का होता है। एक धर्मशास्त्रोक्त दूसरा वैद्यकशास्त्रोक्त, जैसे धर्म-शास्त्र में-

अभक्ष्याणि द्विजातीनाममेध्यप्रभवाणि च।।
।।मनु.।।

द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों को मलीन विष्ठा मूत्रादि के संसर्ग से उत्पन्न हुए शाक फल मूलादि न खाना।

वर्जयेन्मधुमांसं च।। ।।मनु.।।

जैसे अनेक प्रकार के मद्य, गांजा, भांग, अफीम आदि-

बुद्धिं लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारी तदुच्यते।।

जो-जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ हैं उनका सेवन कभी न करें और जितने सड़े, बिगड़े, दुर्गान्धदि से दूषित, अच्छे प्रकार न बने हुए और मद्यमांसाहारी म्लेच्छ कि जिनका शरीर मद्यंस के परमाणुओं ही से पूरित है उनके हाथ का न खावें।

जिसमें उपकारक प्राणियों की हिंसा अर्थात् जैसे एक गाय के शरीर से दूध, घी, बैल, गाय उत्पन्न होने से एक पीढ़ी में चार लाख पचहत्तर सहस्र छः सौ मनुष्यों को सुख पहुंचाता है वैसे पशुओं को न मारें; न मारने दें। जैसे किसी गाय से बीस सेर और किसी से दो सेर दूध प्रतिदिन होवे उसका मध्य भाग ग्यारह सेर प्रत्येक गाय से दूध होता है। कोई गाय अठारह और कोई छः महीने तक दूध देती है, उसका भी मध्य भाग बारह महीने हुए। अब प्रत्येक गाय के जन्म भर के दूध से 24960 (चौबीस सहस्र नौ सौ साठ) मनुष्य एक बार में तृप्त हो सकते हैं। उसके छः बछियां छः बछड़े होते उसमें से दो मर भी जाय तो भी दश रहे। *(क्रमशः)*

वेदांजलि

श्रद्धापूर्ण हृदय से उसे ध्याओ

❑पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः।
अग्निमिन्धे विवस्वभिः।। *(सामवेद : 19)*

शब्दार्थ-

(मर्त्यः) मनुष्य **(मनसा)** श्रद्धा से **(अग्निम्)** परमात्मा का **(इन्धानः)** ध्यान करता हुआ **(धियम्)** बुद्धि को **(सचेत्)** अच्छे प्रकार प्राप्त हो, इसलिए **(विवस्वभिः)** सूर्य किरणों के साथ **(अग्निम्)** परमेश्वर को **(इन्धे)** हृदय में विराजित करे।

व्याख्या-

मन्त्र में मुख्य रूप से तीन बातें कही गई हैं-(1) मनुष्य को श्रद्धापूर्वक प्रभु का भजन करना चाहिए। (2) भक्ति का क्या फल होता है? (3) भजन का उत्तम समय कौन-सा है? अब क्रमशः विचार कीजिये।

श्रद्धापूर्वक ईश्वर-चिन्तन मनुष्य के मुख्य कर्तव्यों में सर्वप्रथम है। प्रभु का भजन अथवा जप, भावना और श्रद्धा के साथ होना चाहिए। बिना भावना के भजन निरर्थक है। उसका मन पर कोई प्रभाव नहीं होता। भक्ति के क्षेत्र में अनेक प्रकार के भ्रान्तिपूर्ण ढर्रे पड़ गये हैं, जिनसे लाभ के स्थान पर हानि होती है। अनेक लोग मालाओं से प्रणव-जप करते हैं, गायत्री-मंत्र की माला फेरते हैं। उनके इस जप का विश्लेषण किया जाय तो यह है कि जीभ तो ओमु-ओमु मुख में बोल रही है और गणना के लिए अंगुलियों में माला के मनके घूम रहे हैं तथा मन न जाने कहाँ-कहाँ दौड़ रहा है। जैसाकि इसी भाव का शब्दचित्र कबीर ने उतारा है-

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माहि।
मनुआ तो चहुँ दिसि फिरै, यह तौ सुमिरन नाहिं।।

मंत्र की दूसरी बात है भक्ति से मनुष्य विवेकी बनके सत् और शुभ कर्म करेगा। उसकी विद्या ज्ञान के प्रकाश का कार्य करेगी। उसका धन अभावग्रस्त समाज की आवश्यकताओं का पूरक होगा। उसकी शक्ति और क्षमता गिरतों को उठायेगी। यह भी ईश्वर-भक्ति ही है। वह भक्ति चिन्तन के द्वारा थी और यह कर्म के द्वारा। वास्तव में देखा जाय तो यह दूसरा पक्ष अधिक महत्वपूर्ण है। जो कुछ अपने पास हो, उसे दूसरों के लिए अर्पित करना, यह देवत्व है। इस भक्ति का लाभ यह होगा कि मनुष्य ऊँचा उठकर देव बन जाएगा।

प्रभु-भक्ति से बुद्धि निर्मल होती है और मनुष्य पवित्र कर्म करता है। गौतम मुनि ने न्यायदर्शन में इसका क्रमिक और सुन्दर वर्णन किया है-**'दुःखजन्मप्रवृत्ति दोषमिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरा पायादपवर्गः'** -'बुद्धि के निर्मल होने पर ही मिथ्याज्ञान, अर्थात् अविद्या के फन्दों से मनुष्य बचेगा।' अविद्या क विषय में पतंजलि ऋषि ने योगदर्शन में कहा है-**'अनित्याशुचि दुःखानात्मासु नित्यशुचि सुखात्म ख्यातिरविद्या'**-'अनित्य संसार और शरीर आदि को नित्य मानना, अर्थात् जो कार्यजगत् देखने-सुनने में आ रहा है उसे यह समझना कि वह सदा से है और सदा रहेगा, यह अविद्या का पहला अंग है।' अशुचि, मलमय शरीर और मिथ्याभाषण व चोरी आदि अपवित्र कामों को पवित्र समझना, दूसरा अंग है। अमर्यादित विषय-सेवनरूप दुःख में सुख समझना, अविद्या का तीसरा अंग है और अनात्मा में आत्मबुद्धि रखना अविद्या का चौथा अंग है। इस प्रकार यथार्थ ज्ञान होने पर दूषित कर्मों में प्रवृत्ति समाप्त हो जावेगी। इस प्रवृत्ति के समाप्त होने पर जन्म और भोग का झंझट समाप्त हो जाएगा, और जब शरीर का बन्धन ही न रहा तो दुःख स्वतः समाप्त हो गए। सब झगड़ों की जड़ तो शरीर ही है।

मन्त्र की तीसरी बात है-आराधना और साधना के लिए कौन सा समय उपयुक्त है? तो मंत्र में बताया कि प्रातः ब्राह्म-मुहूर्त से लेकर सूर्योदय तक का समय इस साधना के लिए सर्वोत्तम है।

यों तो प्रत्येक समय और प्रत्येक कार्य करते समय हमें प्रभु का ध्यान रखना चाहिए, तभी हम दुष्कर्मों से बच सकते हैं। यदि एक व्यक्ति प्रातःकाल घर में उठकर प्रभु-भजन करता है और वह दुकान पर जाकर जिस मर्यादा का पालन करना चाहिए, नहीं करता या कार्यालय में जाकर रिश्वत के प्रलोभन में फँस जाता है, तो वह क्या भक्ति है? ऐसी भक्ति से तो भक्ति का मार्ग बदनाम ही होता है, क्योंकि ऐसे व्यक्ति के पूजापाठ से लोग उसको धार्मिक समझने के भ्रम में पड़ जाते हैं और धोखा खाते हैं। प्रतिक्रिया यह होती है कि भगवान् को स्मरण करनेवाले ये भक्तजन बहुत बेईमान होते हैं और संसार में नास्तिकता को बढ़ावा मिलता है।

अतः ईश्वर को स्मरण करने का अर्थ है-प्रत्येक काम को पवित्रतापूर्वक मर्यादाओं की रक्षा करते हुए करना चाहिए। ईश्वर के भजन में स्थान और समय का भी बहुत महत्व होता है। ऐसा तो है नहीं कि कोई भी प्रातः आंख मींचकर बैठ जाए तो एक-साथ भक्ति का स्रोत फूट पड़ेगा। हाँ, यदि अन्तःकरण में कुछ सात्विकता है और बाहर से चित्तवृत्तियों को हटाकर एकाग्र करना चाहता है तो इस कार्य में शान्त-स्थान और ब्राह्ममुहूर्त का समय अवश्य ही सहायक होता है। यदि चित्त में सात्विकता नहीं है तो इसके विपरीत भी हो सकता है।

('श्रुति सौरभ' से साभार)

दयानन्द चरितामृतम्

-डॉ.गणेश दत्त शर्मा-

(द्वितीयः सर्गः)

छन्द १०-१२

आजुहाव च सर्वस्वं,
यया संप्रेरिता ह्यसौ।
तत्तत्त्वान्वेषणे ज्ञाने,
तदन्यान् ज्ञपने तथा।।

और जिस भगवदिच्छा से प्रेरित होकर इस मूलशंकर ने तत्त्व के अन्वेषण में, ज्ञान प्राप्ति में तथा अन्य लोगों को ज्ञान प्राप्त कराने में अपना सर्वस्व झोंक दिया।

अपूर्वा चानिवार्या चा-
निर्वाच्या भवितव्यता।
द्वारान् कल्याणमार्गाणां,
करोति या स्वभावतः।।

वस्तुतः भवितव्यता विलक्षण, अनिवार्य एवं अनिर्वचनीय होती है जो स्वाभाविक रूप से कल्याण के मार्गों के द्वार बना देती है।

तस्य विसूचिकाक्रान्ता,
स्वसा यदा दिवंगता।
मानसं हि कुमारस्य
जातमुद्वेलितं महत्।।

उस (मूलशंकर) की हैजे से आक्रान्त बहिन जब दिवंगत हुई तब उस कौमार्य अवस्था वाले का कोमल मन अत्यधिक उद्वेलित हो गया।

('दयानन्द चरितामृतम्' से साभार, क्रमशः)

-साहिबाबाद, गाजियाबाद-२०१००५

सत्संग

जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा :

'ओम् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्नमम तथा ओम् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्न मम।' इन दो मन्त्रों से एक उत्तर में और दूसरी दक्षिण में दो आहुतियाँ क्यों दी जाती हैं?

-प्रो. इन्द्रदेव गुप्त, आर्य समाज, इन्दिरा नगर, लखनऊ

समाधान :

यह विश्वब्रह्माण्ड एक ईश्वरीय यज्ञ है, जिसका यजुर्वेद के 31वें अध्याय में वर्णन किया गया है। यज्ञरूप यह जगत् 'अग्नीषोमात्मकं जगत्' शतपथ ब्राह्मण के इस वचन के अनुसार अग्नीषोमात्मक है, अर्थात् शुष्क और आर्द्र इन दो भागों में बटा हुआ है। हमारा यह यज्ञ इस विश्व-ब्रह्माण्डरूप यज्ञ की अनुकृतिमात्र है। यह भी अग्नि तथा सोमात्मक है। इसमें भी आधा सूखा और आधा गीला है। समिधाएँ सामग्री सूखी हैं तो घृत तथा पायस आदि गीले हैं। सूखा सब आग्नेय है और गीला सब सोमात्मक है। इस प्रकार ये दोनों आज्य आहुतियाँ विश्वब्रह्माण्ड में चल रहे ईश्वरीय यज्ञ और हमारे यज्ञ में अभिरूपता-एकरूपता सम्पादन के लिए दी जाती हैं।

शतपथब्राह्मण में यज्ञ के नेत्रों में इन आहुतियों का निरूपण किया गया है। यथा-

चक्षुषी ह वा एते यज्ञस्य यदाज्यभागौ। तस्मात् पुरस्ताज्जुहोति (पुरस्ताद्धीमे चक्षुषी। पुरस्तादेवैतच्चक्षुषी दधाति)। -काण्ड-1, प्र.-5, ब्रा.-2, कण्डिका 37

पं.श्री गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत टीका- ये जो दो अज्याहुतियाँ हैं ये यज्ञ की दो आँखें हैं, इसलिए इनको पहले देता है, क्योंकि दोनों आँखें समान होती हैं। उसी प्रकार वह (यजमान) दोनों आँखें को सामने रखता है। 'तस्माद्धिमे पुरस्ताच्चक्षुषी', इसलिए ये हमारी आँखें भी सामने हैं।

अभिरूपता के लिए आचार्य कहता है कि आँख का श्वेत, अर्थात् आग्नेय भाग सूखा और काला, अर्थात् आँख के भीतर का सोमात्मक भाग गीला होता है।

एक दूसरे ब्राह्मणग्रन्थ में इसी नेत्र-सम्बन्धी बात को यों कहा है कि 'अग्नी-षोमाभ्यां यज्ञश्चक्षुष्मान्', अर्थात् अग्नि और सोम से यज्ञ चक्षुष्मान् है। इसी प्रकार-

अग्नीषोमयोरहं देवयज्यया चक्षुष्मान् भूयासम्। -तै.स.1.6.2.3

अग्नि और सोम इन दोनों के यजन से मैं चक्षुष्मान् हो जाऊँ। इस भाग में इन आहुतियों द्वारा यजमान अपने लिए अग्नि और सोम के समान चक्षुष्मान् होने की कामना से ये दो आज्यभागाहुतियाँ देता है।

इस प्रकार (1) विश्वब्रह्माण्ड में चल रहे यज्ञ के साथ अपने इस यज्ञ की अभिरूपता के लिए (2) मनुष्य की आँखों की भाँति यज्ञ के दोनों नेत्रों के रूप में तथा (3) अग्नि और सोम के तुल्य तेज और सौम्यतायुक्त नेत्रों की प्राप्ति की कामना से ये दो आज्यभागाहुतियाँ दी जाती हैं।

(पृष्ठ 1 का शेष....)

श्रीराम का.....

यह विजय है किसकी? जिसे आप अपनी विजय समझ रहे हैं, उसे ही मैं अपनी सफलता मानता हूँ। मेरे पिता बाली के दो शत्रु थे- एक रावण और दूसरे उनकी जीवनलीला समाप्त करनेवाले आप। योग्य पुत्र का कर्त्तव्य है कि मैं अपने पिता की भावना का संरक्षण करूँ, अतः आपको पूर्ण सहयोग देकर मैंने अपने पिता के एक शत्रु को तो समाप्त कर दिया है, इसलिए रावण की मृत्यु को मैं अपनी विजय मानता हूँ और अनुभव करता हूँ कि पिता का आधा ऋण मैंने चुका दिया, किन्तु मैं जबतक आपको पराजित नहीं करता, पितृऋण से उऋण नहीं हो सकता। अतः अब मेरा और आपका युद्ध होगा और फिर विजयश्री जिसको भी प्राप्त होगी, वही उत्सव मनाने का अधिकारी होगा।'

राम ने इस विषम परिस्थिति को अपनी दूरदर्शिता से चुटकियों में सुलझा दिया। राम ने आगे बढ़कर अंगद की पीठ थपथपाते हुए कहा-'अंगद! तुम्हारे परिचयकाल से ही तुम्हारी वीरता, विनम्रता और कार्यकुशलता ने मुझे प्रभावित किया है। तुम्हारी इस भावना से मैं तुमसे अत्यंत प्रसन्न हूँ। निश्चय ही तुम वीर पिता के अनुव्रत पुत्र हो। मैं भी इस विजय को तुम्हारी विजय स्वीकारता हुआ अपने को भी इसका भागीदार समझता हूँ। तुम्हें स्मरण है, जीवन के अन्तिम क्षणों में तुम्हारे पिता ने तुमको मुझे सौंपते हुए मुझसे यह वचन लिया था कि मैं पुत्र की तरह तुम्हें संरक्षण दूँ। इस प्रकार तुम मेरे पुत्र हो और शास्त्रों का वचन यह है कि 'सर्वस्माज्जयमिच्छेत् पुत्रादिच्छेत्परा-जयम्'- मनुष्य सबसे अपनी जीत चाहे, किन्तु अपने पुत्र से अपनी पराजय पसन्द करे। इस रूप में तुम जीते और मैं हारा। तुम्हारी इस विजय में मैं भी सम्मिलित होता हूँ। मुझे दुहरी प्रसन्नता है कि मैं तुम्हारे पिता को दिये वचन का पालन कर सका।' यह राम के जीवन का और उनकी नीतिमत्ता का एक स्वर्णिम उदाहरण है और अंगद के वीरोचित जीवन का भी, जिसके कारण राम के हृदय में उसको स्नेहपूर्ण स्थान मिला।

('श्रुति सौरभ' से सम्पादित अंश, साभार)

रही बात उत्तर और दक्षिण दिशा की। इसके लिए पहली बात आप यह ध्यान में रक्खें के देवयज्ञ में प्रत्येक क्रिया प्रदक्षिणक्रम से की जाती है तथा यज्ञानुष्ठान के लिए यजमान पुर्वाभिमुख बैठता है। इस अवस्था में प्रदक्षिणक्रम से यज्ञानुष्ठान करते समय यज्ञ की चक्षुस्थानीय पहली आहुति उत्तर में ही देनी होगी और दूसरी दक्षिण में। इन आहुतियों का उत्तर और दक्षिण दिशा से सम्बन्ध नहीं है। अपितु ये अग्नि और सोम की दो आहुतियाँ यज्ञ के वाम (उत्तर) और दक्षिण नेत्र के रूप में दी जाती हैं, क्योंकि नासिका सामने होती है और दोनों आँख नाक के उत्तर और दक्षिण दिशा में होती हैं। यज्ञ की नेत्रस्थानीय होने से ये दोनों आहुतियाँ कुण्ड के मध्यभाग से उत्तर और दक्षिण दिशा में दी जाती हैं। इन आहुतियों के उत्तर और दक्षिण दिशा में देने का यही एकमात्र कारण है।

-स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती, 'शंका समाधान' से

होता सदस्य परिचय-66

लघुकाया में विराट व्यक्तित्व

डॉ.सत्य प्रकाश

आर्य समाज, सण्डीला

सत्यनिष्ठा, उज्ज्वल चरित्र, ईमानदारी, तप-त्याग, परोपकारिता, मृदुभाषिता, मिलनसारिता, शालीनता, ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के प्रति श्रद्धा-समर्पण, श्रमशीलता, यश की किंचित् कामना न करना, निष्काम कार्यभावना- जितने भी मनुष्य में सद्गुण होने चाहिए- यदि किसी एक व्यक्ति में आप देखना चाहें तो मैं डॉ.सत्य प्रकाश, मंत्री, आर्य समाज, सण्डीला, जिला-हरदोई का नाम बेहिचक लूँगा।

डॉ.सत्य प्रकाश सण्डीला के हैं, सण्डीला उनकी पहचान है। मेरी जन्मभूमि इसी तहसील के गोनी नामक ग्राम में है। डी.ए.वी.कालेज, आजमगढ़ में सेवारत होने के पश्चात भी मेरा गोनी आना जाना बना रहता था, क्योंकि मेरे पूज्य पिता स्व. पं.देवदत्त त्रिपाठी, आयुर्वेदाचार्य वहीं थे, जो आर्य समाज गोनी के प्रधान भी थे। उसी दौरान 1969-70 के मध्य जब मैं गोनी गया तो मुझे लोगों से यह ज्ञात हुआ कि सण्डीला-कोयावाँ मार्ग पर कई जगहों पर निःशुल्क सेवा-सहायता, शिक्षण, चिकित्सा इत्यादि कार्यक्रमों वाले शिविर लगाये गये हैं। बहुत प्रयत्न करने पर पता चला कि इन शिविरों के आयोजक का नाम डॉ.सत्य प्रकाश, सण्डीला निवासी है। नाम के इस आकर्षण और सत्कार्यों की सुगन्ध का मैं अनुभव कर ही रहा था कि आर्य लोक वार्ता के प्रकाशन के प्रारंभ होने के बाद सदस्यता अभियान के सिलसिले में मैं डॉ.सत्य प्रकाश जी से सण्डीला जाकर मिला। पहली मुलाकात में ही जो छाप मेरे हृदय पर उन्होंने अंकित की, वह अमिट है। तत्काल मेरे साथ चलकर सण्डीला के प्रमुख आर्यजनों से मलकर उन्होंने आर्य लोक वार्ता के लगभग 25 सदस्य बना दिये, जो आजतक चले आ रहे हैं। एक घंटे में यह कार्य उन्होंने कर दिखाया, जो लोग जीवन पर्यन्त नहीं कर पाये। यह है डॉ. सत्य प्रकाश का आर्यजनों पर प्रभाव। उसी वर्ष उन्होंने श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर सण्डीला आमंत्रित करके मेरा बृहद् कार्यक्रम आयोजित किया जो अत्यंत भव्य था। सैकड़ों आर्यजनों ने यज्ञ में भाग लिया, मेरा भाषण सुना और मालाओं से लाद दिया। आर्य समाज सण्डीला के वार्षिकोत्सव पर उन्होंने मेरे अभिनन्दन का विशेष कार्यक्रम भी रखा।

डॉ.सत्य प्रकाश जी के सेवा परोपकारों की सूची बड़ी लम्बी है; जिसको एक लेख में बांधा नहीं जा सकता। विशेषकर निःशुल्क आई कैम्प, मोतियाबिन्द का ऑपरेशन परीक्षण उनके द्वारा प्रत्येक मास के तीसरे सप्ताह में किया जाता है, इन्दिरा गांधी आई फाउन्डेशन लखनऊ के सहयोग से। इसमें एक बार रजिस्ट्रेशन के बाद निर्धन से निर्धन व्यक्ति की आँखों का सफल इलाज होता है, यहाँ तक कि उसके लखनऊ जाने और घर आने का व्ययभार भी डॉ.साहब ही उठाते हैं। यह बताते चलें कि यह समस्त सेवाकार्य वे अपने श्रद्धेय पिता स्व. लाला गंगा प्रसाद की पावन स्मृति में संस्थापित लाला गंगाप्रसाद मानव कल्याण समिति के तत्वावधान में ही सम्पन्न करते हैं। दीन बालकों की शिक्षा की दृष्टि से प्रति वर्ष एक बालक की शिक्षा की व्यवस्था आचार्य शिवदत्त पाण्डेय के सुल्तानपुर स्थित आर्ष गुरुकुल में की जाती है। इसका व्ययभार समिति ही वहन करती है।

सण्डीला की जनता का यह सौभाग्य है कि डॉ.सत्यप्रकाश जैसा सफल सुयोग्य होम्यो. चिकित्सक उनके मध्य है जो सम्पूर्ण समाज को बगैर भेदभाव के सस्ती चिकित्सा सुलभ करा रहा है। जिस दिन डॉक्टर साहब नहीं रहते हैं या चिकित्सालय बन्द रहता है, जनता के दिलों में अंधेरा रहता है।

आर्य समाज सण्डीला के वार्षिकोत्सव एवं अन्य कार्यक्रमों, यज्ञों के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में दूरवर्ती गाँवों में जाकर साप्ताहिक शिविर लगाकर वेद प्रचार कार्यक्रमों का संचालन तो मानों आपकी दिनचर्या है।

डॉ.सत्य प्रकाश का जन्म 31 जुलाई 1945 को सण्डीला में हुआ। पिता लाला गंगाप्रसाद एवं माता स्व.श्रीमती रामजानकी की चतुर्थ संतान होना वे अपने जीवन का सौभाग्य मानते हैं। सण्डीला आर्य समाज के आज भी डॉ.सत्य प्रकाश कर्णधार हैं यद्यपि वे अपने सभी पदों और दायित्वों को भावी पीढ़ी को सौंप चुके हैं। सन् 2004 में प्राणप्रिया श्रीमती इन्दुबाला के निधनोपरान्त उनके जीवन को पुत्रियां- नीलिमा, आभा, विभा ही संभालती हैं। सुयोग्य पुत्रियाँ पाकर डॉ.सत्य प्रकाश अपने आप को कृतार्थ मानते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि डॉ. सत्य प्रकाश जी प्रचार और यश की कामना से दूर रहते हैं। आर्य लोक वार्ता के सम्मान समारोहों में वे आये अवश्य किन्तु मंच पर कभी भी नहीं आये यह उनकी निःस्पृहता का एक ज्वलंत उदाहरण है। जीवन के चतुर्थ आश्रम में पहुंच चुके लगभग 75 वर्ष की परोपकारी जीवन यात्रा तय कर चुके डॉ.सत्य प्रकाश की सक्रियता में कोई कमी नहीं है। आर्य लोक वार्ता से उनके प्रेम अनुराग का आलम यह है कि वे स्वेच्छा से सहयोग राशि अर्पित करते रहते हैं।

अपने समस्त शुभकार्यों का श्रेय वे अपने पिता लाला गंगाप्रसाद को देते हैं तथा पिता लाला गंगाप्रसाद की पुण्यतिथि प्रेरणा दिवस के रूप में प्रतिवर्ष मनाई जाती है, जिसमें परोपकारार्थ अनेक कार्यक्रम सम्पन्न होते हैं।

लघु काया में सन्निहित
यह व्यक्तित्व विराट्।
सण्डीला गौरव प्रवर
आर्य हृदय सम्राट्।।
न तो सुयश की कामना
न तो सुखद अभिलाष।
आर्यत्व का पर्याय है-
डाक्टर सत्य प्रकाश।।

-डॉ.वेद प्रकाश आर्य

शुभाकांक्षा

आर्य लोक वार्ता का सितम्बर २०२१ अंक प्राप्त हुआ। इस बार अंक बहुत ही अच्छा व ज्ञानवर्द्धक है। काव्यायन में इस बार हिन्दी-दिवस के अनुरूप हिन्दी का रंग छाया हुआ है। अमृत खरे और डॉ. कैलाश निगम की रचनाएँ जो गीत रूप में हैं, क्रमशः 'हिन्दी हैं हम' और 'राष्ट्रभाषा' तो अच्छे हैं ही साथ ही राधवेन्द्र शर्मा त्रिपाठी 'ब्रजेश' के सवैया छन्द भी मन मुग्धकारी एवं रोचक हैं। जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' के कवित्त 'कृष्ण का ब्रज प्रेम' जो ब्रजभाषा में है ब्रज-माधुरी घोलने वाले कालजयी छन्द हैं। श्रीशरत्न पाण्डेय की 'जीवन सरिता' तथा रामा आर्य 'रमा' की 'बन्द हुई मन की खिड़की' भी मनुष्य को सोचने पर विवश करती हैं। सम्पादकीय पठनीय व मननीय है। पृष्ठ आठ पर ठा.विक्रम सिंह के व्यक्तित्व व कृतित्व पर आधारित ककुभ छन्द में निबद्ध डॉ.वेद प्रकाश आर्य की रचना '१६ सितम्बर जिनका जन्मदिवस है' मनहर रचना है। समाचार व अन्य स्तम्भ भी पठनीय हैं। अक्षरलोक में अमृत खरे द्वारा की गई समीक्षाएँ संक्षिप्त होते हुए भी सारगर्भित हैं। कुल मिलाकर अंक पठनीय ही नहीं संग्रहणीय भी है। सुन्दर ज्ञान प्रदायक अंक हेतु सम्पादक जी को बहुत-बहुत बधाई।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'
370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

***

आदरणीय बहन श्रीमती सरला आर्य जी के निधन से आर्यजगत के लिए अपूरणीय क्षति है। बहन जी विपरीत परिस्थितियों को पारकर शिखर पर पहुंची। सम्पूर्ण आर्य जगत को वेदों का संदेश देने वाली पत्रिका आर्य लोक वार्ता के प्रकाशन में विशेष सहयोग रहा। उनकी अन्तिम इच्छा भी यही थी कि आर्य लोक वार्ता का प्रकाशन बन्द नहीं होना चाहिए। आर्य समजा सण्डीला की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

आर्य लोक वार्ता का जुलाई २०२१ अंक पढ़ने का अवसर मिला। आद्योपांत मुझे एक-एक लेख अच्छा लगा। पंडित शिवकुमार शास्त्री की रचना श्रीराम ने अपने उच्च चरित्र से पुनः स्थापित किया था वैदिक समाज। संपादकीय में योगी की परिकल्पना बहुत अच्छा एवं यथार्थ है। 'वेदांजलि' बहुत अच्छा लगा। मुझे तो सभी रचनायें बहुत अच्छी लगीं। बहुत बहुत धन्यवाद। मेरी शुभकामनाएँ।

-डॉ.सत्य प्रकाश
प्रकाश होम्यो हाल, सण्डीला, जिला-हरदोई

***

आर्य लोक वार्ता का सितम्बर अंक डाक द्वारा प्राप्त हुआ। अग्रलेख के रूप में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसरानुकूल गोपेश्वर कृष्ण कृति का लेखांश लेखक पंडित चमूपति शास्त्री अत्यंत समीचीन, सटीक और सारगर्भित लगा। इसमें योगेश्वर कृष्ण की बाल लीलाओ का यथार्थपरक एवं अर्थपूर्ण लौकिक विवेचन प्रस्तुत किया गया है। कदाचित् धार्मिकता के अतिरेक में अलौकिकता प्रभावी हो जाती है। ऐसे गंभीर आलेख सत्य को अनावृत्त कर आँखें खोलने वाले होते हैं। सहसा विद्वान लेखक की पुस्तक 'गोपेश्वर कृष्ण' के पाठ की जिज्ञासा बलवती हुई है। संपादकीय में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के क्रांतिकारी व्यक्तित्व का परिचय देना सुखद लगा। देश को सैकड़ों वर्षों के बाद ऐसा देशभक्त, दृढ़प्रतिज्ञ और साहसी जनसेवक मिला है। होता सदस्य परिचय के अंतर्गत चौधरी रणवीर सिंह का व्यक्तित्व प्रणम्य लगा। ऐसे आर्यरत्न को साधुवाद। 'जिज्ञासा और समाधान' में बिहारी लाल के दोहे का आप द्वारा सप्रसंग विवेचन रुचिकर है। अन्य स्तम्भों में भी प्रदत्त ज्ञान भाव विभोर करता है। 'काव्यायन' में सभी वरेण्य सुकवियों की रचनाएँ मनमोहक हैं। श्री दयानन्द जड़िया 'अबोध' की इस पत्र से आत्मीयता सुविदित है। प्रसन्नता का विषय है कि इस बार उन्हें उ.प्र.हिन्दी संस्थान लखनऊ से प्रतिष्ठित हिंदी साहित्य भूषण से अलंकृत किया गया है, एतदर्थ उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामना।

ज्ञान की खान है, आर्य लोक वार्ता,
लक्ष्य में महान है, आर्य लोक वार्ता।
शब्द-शब्द पठनीय, मननीय, नमनीय,
आर्य-संविधान है, आर्य लोक वार्ता।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

***

आर्य जगत के सुविख्यात पत्र आर्य लोक वार्ता का गतांक पूर्व की तरह ही अनेक विशेषताओं से भरा हुआ है। डॉ. वेद प्रकाश आर्य का सम्पादकीय सदैव के समान ज्ञानवर्द्धक और रोचक लगा। सभी स्थाई स्तम्भ पत्र को महत्वपूर्ण बनाते रहे हैं। 'जिज्ञासा और समाधान' में आर्य कन्या ओशा पाण्डेय जो एक बड़े विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर विज्ञान में द्वितीय वर्ष की छात्रा है, ने बिहारी के एक दोहे का सप्रसंग अर्थ पूछा था। सम्पादक जी ने उस दोहे का अर्थ विस्तार से समझा कर दिया है। यह अर्थ वास्तव में पठनीय एवं संग्रहणीय है।

रामा आर्य 'रमा' की कविता विशेष उल्लेखनीय है। हिन्दी दिवस पर दयानन्द जड़िया के दोहे गेय और सारगर्भित लगे। डॉ.कैलाश निगम जो मंचों पर अपने मधुर कण्ठ से लोकप्रिय हैं, की राष्ट्रभाषा नामक कविता प्रशंसनीय है। विगत कई वर्षों से ग्रामीण अंचल के स्वर्गीय छन्दकार राधवेन्द्र शर्मा त्रिपाठी 'ब्रजेश' का आर्य लोक वार्ता में विशेष स्थान रहा है। इस अंक में भी 'नागरी' नामक कविता अद्वितीय लगी। योगेश्वर श्रीकृष्ण के बाल्यकाल का वैज्ञानिक निरूपण करने वाला मुख्य लेख प्रथम पृष्ठ पर स्थान ग्रहण कर पत्र को एक विशेष आकर्षण दे गया। पूतनावध, शकटासुर वध, वकासुर वध, गोबरधन लीला आदि का वैज्ञानिक विश्लेषण कृष्ण लीला को आधुनिक पाठकों के लिए भी ग्राह्य लगा। श्री अमृत खरे जी का विनय पीयूष हमेशा की भांति प्रभावित करता है।

-श्रीशरत्न पाण्डेय
बसंतकुंज, आई.आई.एम. रोड, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' का सितम्बर २०२१ अंक समय से डाकघर के सौजन्य से प्राप्त हुआ। इस हेतु मैं डाक वितरक एवं डाकघर बाराबंकी के पदाधिकारियों का कृतज्ञ हूँ। आशा करता हूँ कि भविष्य में भी 'आर्य लोक वार्ता' मेरे पते पर पहुँचाने के लिए डाकघर बाराबंकी के कार्यकर्ता गण विशेष तत्परता दिखायेंगे।

'आर्य लोक वार्ता' के इस अंक का सम्पादकीय विशेष प्रभावित करता है क्योंकि इसमें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर मोदी के कर्तृत्व का वर्णन है। ऐतिहासिक उदाहरणों को पेश करते हुए सम्पादक जी ने यह बताने का प्रयास किया है कि मोदी जी ने किस प्रकार भारत राष्ट्र को अखण्ड भारत का स्वरूप प्रदान करने में सफलता प्राप्त की है। आर्य समाज सीतापुर के ४७ वर्ष पुराने चित्र को प्रकाशित करके बड़ा उपकार किया है। इस चित्र में स्वयं आपका ४७ वर्ष पूर्व का चित्र है, जब आप व्याख्याता के रूप में उत्सवों पर जाते थे- साथ ही महात्मा आर्यभिक्षु जी, रामनारायण ब्रह्मचारी जी क्रान्तिकारी वक्ता माने जाते थे और प्रोफेसर सुरेन्द्र शुक्ल जो अब इस संसार में नहीं हैं- आधुनिक अर्जुन के नाम से मशहूर थे। इन सभी के पुराने चित्रों को देखने का अवसर मिला। इस हेतु श्री शिवशंकर लाल वैश्य भी धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने यह चित्र प्रकाशनार्थ उपलब्ध कराया है। चौधरी रणवीर सिंह पर होता सदस्य लेखमाला में जो लेख प्रकाशित है वह भी महत्वपूर्ण जानकारियाँ दे रहा है। श्री अमृत खरे के 'विनय पीयूष' के अलावा 'हिन्दी हैं हम' कविता, श्रीश पाण्डेय की 'हुआ बहुत बेजार कोरोना' सामयिक रचनाएँ हैं किन्तु जगन्नाथ दास रत्नाकर का ब्रजप्रेम काव्य तो शाश्वत प्रभाव रखता है।

-आचार्य सत्यप्रकाश आर्य
आवास विकास कालोनी, बाराबंकी, उ.प्र.

***

मैं प्रत्येक मास में कम से कम एक बार 'योगाश्रम', अलीगंज लखनऊ में पितृतुल्य आदरणीय श्री पाल प्रवीण जी से भेंट कर लेता हूँ जिससे मुझे मार्गदर्शन एवं आत्मिक संतोष का अनुभव होता है। इस बार मेरी उनसे भेंट हुई तो उन्होंने 'आर्य लोक वार्ता' के अगस्त अंक में प्रकाशित सम्पादकीय लेख की बड़ी प्रशंसा की। उन्होंने बताया कि उक्त लेख '१८६७-१६४७' को स्वयं पढ़ा और श्रीमती कमलेश पाल जी को भी पढ़ने को दिया जिसे उन्होंने भी पढ़ा और सराहना की। इसी अंक में प्रकाशित स्वामी विवेकानंद और स्वामी दयानन्द सरस्वती के संबन्ध में नई जानकारियां थीं और उन्हें शोधपूर्ण एवं नये अंदाज में लेखक द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

यद्यपि ये पाल प्रवीण जी के विचार मौखिक हैं तथापि इसे मैं पाठकों तक पहुँचाना उचित एवं आवश्यक समझता हूँ। इसके लिए मैं श्री पाल प्रवीण जी का आभारी हूँ।

-अमित वीर त्रिपाठी
शिव विहार कालोनी, लखनऊ

***

अक्षर लोक

शान्तिधर्मी ऋषि बोधांक (मासिक पत्रिका)
सम्पादक : सहदेव समर्पित
प्रस्तुति : ए–4 साइज/पृष्ठ संख्या 100
मूल्य : एक प्रति 20 रु., वार्षिक 200 रु.
प्रकाशक : सहदेव, सम्पादक, 'शान्तिधर्मी'
756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक, जीन्द–126 102 (हरि.)

पण्डित क्षितीश वेदालंकार की स्मृति में 'शान्तिधर्मी' मासिक का फरवरी-मार्च २०२१ संयुक्तांक 'ऋषि बोधांक' के रूप में प्रकाशित किया गया है। 'ऋषि बोधांक' मूलतः १६८४ में 'आर्य जगत' पत्र ने प्रकाशित किया था, जिसके सम्पादक स्मृतिशेष पण्डित क्षितीश वेदालंकार ही हुआ करते थे। लगभग पौने दो सौ पृष्ठों का यह विशेषांक वेदालंकार जी की गरिमा के अनुरूप पठनीय, मननीय और संग्रहणीय बन पड़ा था। 'शान्तिधर्मी' ने 'ऋषि बोधांक' का पुनर्प्रकाशन कर अपने पाठकों पर उपकार ही किया है। मूल 'ऋषि बोधांक' की सामयिक सामग्री का परित्याग और 'शान्तिधर्मी' की नियमित सामग्री की उपलब्धता सम्पादकीय सूझबूझ का परिचायक है।

सम्पादकीय के अन्तर्गत सहदेव समर्पित लिखते हैं कि लौह लेखनी के धनी स्व.पं.क्षितीश वेदालंकार जी ने अपने सम्पादन काल में 'आर्य जगत' के बहुत प्रभावशाली विशेषांक निकाले।...सम्पादक और साहित्यकार के रूप में क्षितीश जी का समग्र मूल्यांकन कोई सरल कार्य नहीं है। इस सामग्री के अवलोकन से हमें क्षितीश जी की सम्पादन कला का कुछ भान होता है। विषयवस्तु का चयन, प्रस्तुतिकरण, विषय की विविधता- और सबसे बढ़कर पाठकों के साथ-साथ पूरे समाज के मनोबल को संबल प्रदान करते रहना- पत्रकारिता के इस शाश्वत कर्त्तव्य का उन्होंने सफलतापूर्वक निर्वहन किया।

डॉ.विवेक आर्य द्वारा प्रस्तुत श्री पण्डित क्षितीश जी वेदालंकार का संक्षिप्त जीवन परिचय 'अंक' को पूर्णता प्रदान करता है तो क्षितीश जी द्वारा 'आर्य जगत्' के लिये १६८४ में लिखा गया सम्पादकीय 'नया ऋषिबोध' विशेषांक की गरिमा को अनन्त ऊँचाइयों तक ले जाता है। 'ऋषि बोधांक' के सभी लेख पठनीय हैं। श्री वीरसेन वेदश्रमी वेद विज्ञानाचार्य द्वारा प्रस्तुत लेख 'शिव-शंकर-दयानन्द' श्रद्धा-भक्ति से समन्वित, साहित्यिक सौष्ठव से आप्लावित, कल्पना की उड़ान से गतिशील एक अद्भुत रचना है। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का लेख 'ऋषि बोधोत्सव कैसे मनाओगे?' चिन्तन के लिये विवश करता है। 'आर्य समाज का मौलिक आधार' शीर्षक डॉ.स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती के लेख में धर्म के वैज्ञानिकीकरण और विज्ञान के आध्यात्मी करण पर बल दिया गया है। 'युग पुरुष दयानन्द' शीर्षक अपने लेख के माध्यम से पूर्व केन्द्रीय मंत्री प्रो.शेर सिंह ने स्पष्ट किया है कि जिस सामाजिक जीवन शैली को ऋषि दयानन्द ने उत्तम कहा, वह केवल इसलिये नहीं कि वेदों ने उसका प्रतिपादन किया था, बल्कि इसलिये कि वह तर्कसंगत थी और मानव का कल्याण करने वाली थी।

'शिवरात्रि नहीं-ऋषिबोध पर्व' लेख में धर्मदेव चक्रवर्ती लिखते हैं कि वैदिक धर्म के पुनरुत्थान के लिये जो कार्य अनेक शताब्दियों में संभव न हो सका वह 'एक शिवरात्रि' में महर्षि दयानन्ठ के माध्यम से संभव हो गया।

अमेरिकन योगी एण्ड्रो जैक्सन डेवी ने कहा था कि 'मैं एक धधकती ज्वाला को देख रहा हूँ, अनन्त प्रेम की अनन्त ज्वाला, जो समस्त द्वेष दावानल को भस्मसात् कर देगी। इस धधकती ज्वाला का नाम है- आर्य समाज।' उमा राव ने अपने विचारपरक लेख में इसी को विस्तार दिया है। लेख का शीर्षक है- 'आर्य समाज-अनन्त प्रेम की ज्वाला'।

'शान्तिधर्मी' के ऋषि बोधांक में स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व और कृतित्व को रेखांकित करते अनेक लेख हैं। 'मृत्युंजय मूलशंकर' (हरिदास 'ज्वाल'), 'यदि आज महर्षि दयानन्द होते!' (बलराज मधोक), 'प्यार का देवता' (सुषमा आर्य), 'स्वामी दयानन्द के जीवन का एक अधखुला पृष्ठ' (प्रताप नारायण मिश्र), 'स्वतंत्रता संग्राम और दयानन्द' (डॉ.यशोदा आर्या शास्त्री), 'क्या दयानन्द का स्वप्न पूर्ण होगा?' (श्री पी.डी.चौधरी), 'ऋषि बोध का संदेश' (दरबारी लाल), 'स्वामी दयानन्द के क्रान्तिकारी आर्थिक मन्तव्य' (डॉ. विक्रम कुमार विवेकी), 'सत्यज्ञान की प्राप्ति' (डॉ.सर्वदानन्द आर्य), 'द माइण्ड ऑफ स्वामी दयानन्द' (कोटा वेंकटेश्वर राव) आदि लेख स्वामी जी को लगभग समग्रता में प्रस्तुत करने में सक्षम दीखते हैं।

'वेद में अमृत का अर्थ' (मनोहर विद्यालंकार), 'अजमेर से टंकारा' (रामनाथ सहगल), 'कब होगा यह आत्मबोध?' (डॉ.सुरेन्द्र कुमार शर्मा), 'यूरोपीय विद्वानों की संस्कृत सेवा' (राम सुभग सिंह), 'निराशा- आशा-निराशा' (आचार्य विश्वश्रवा), 'आर्य समाज और हिन्दी' (आचार्य क्षेमचन्द सुमन), 'वेद और समाज-व्यवस्था' (वेद मार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत वेद वाचस्पति), 'वेदेषु राष्ट्रधर्मो विश्व धर्मश्च' (डॉ.कपिल देव द्विवेदी) प्रभृत लेख विशेषांक को पूर्णता प्रदान करते हैं।

'ऋषि बोधांक' में पत्रिका के अनेक स्तम्भों के साथ-साथ अनेक भक्तिभाव पूर्ण, प्रेरक तथा उद्बोधक कविताएँ भी पठनीय हैं। राजकुमार शर्मा विद्यालंकार की रचना 'शिवरात्रि का स्वप्न', 'प्रणव' शास्त्री के 'ऋषि बोधाष्टक', रमेश सोनी 'मधुकर' कृत 'बहरा बसन्त', गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' की गीतिका 'राष्ट्र वन्दन करें' और श्रीमती महादेवी वर्मा की लम्बी गीत रचना 'हे धरा के अमर सुत! तुमको अशेष प्रणाम!' अपने साहित्यिक सौष्ठव के कारण विशेष उल्लेखनीय है।

'शान्तिधर्मी' परिवार के सभी सदस्यों को 'ऋषि बोधांक' के लोकोपयोगी प्रकाशन के लिये बधाई!

धारावाहिक-20 कालजयी रचना

आर्य-संस्कृति के मूल तत्त्व

-डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार-

यह कहना कि जिस समय हमने पहले-पहल चीज चुरायी थी उस समय ही हम चोरी करने-न-करने में स्वतंत्र नहीं थे, कर्मों के लेखे के अनुसार हमें चोरी करनी ही थी, यह विधि का विधान था, टल नहीं सकता था--यह कहने के समान है कि 'आत्म-तत्त्व' आत्म-तत्त्व नहीं है, ईंट-पत्थर है। यह तो हम देखते हैं, अनुभव करते हैं कि क्रोध हमें आता है, हम चाहें तो क्रोध को दबा भी सकते हैं, लालच हमें पराभूत कर देता है, हम चाहें तो लालच को जीत भी सकते हैं, बदले की भावना सिर पर सवार हो जाती है, हम चाहें तो इस भावना से ऊपर भी उठ सकते हैं, काम में आदमी पागल हो जाता है, सोच-समझ से चले तो काम के वेग को शान्त भी कर देता है। इस बात को खूब अच्छी तरह से समझ लेने की जरूरत है कि कर्म के चक्र के चल पड़ने का कारण भौतिक नहीं, आध्यात्मिक है। काम-क्रोध-लोभ-मोह--इन भौतिक नहीं, किन्तु आध्यात्मिक कारणों से हम कर्म के चक्र को चलने देते हैं। असंख्य प्राणियों का कितना ही कर्म का चक्र है जो सिर्फ काम-वासना को काबू में न रखने के कारण चल रहा है। लाखों-करोड़ों प्राणियों के कर्म-चक्र के पीछे क्रोध है, लोभ है, या मोह है। कर्म-चक्र के चलने में ये आध्यात्मिक, अर्थात् शरीर से नहीं अपितु मन तथा आत्म से संबन्ध रखने वाले कारण हैं; और इसलिये कर्म-चक्र में से निकलने के आध्यात्मिक ही उपाय हैं। आर्य- संस्कृति का मूल-तत्त्व यह था कि काम-क्रोध-लोभ-मोह आदि मानसिक विकारों पर विजय पा लिया जाय तो कर्म का बन्धन, उसका चक्र अपने-आप कट कर गिर जाता है, और इन पर विजय पाना अपने हाथ में है।

भोग-योनि तथा कर्म-योनि--

काम-क्रोध-लोभ-मोह आदि मन के आवेग हैं। इनके वश में पड़ जाने से कर्म का चक्र चल पड़ता है, इन्हें अपने वश में कर लेने से चक्र टूट जाता है। परन्तु इन्हें वश में कर लेना भी तो कोई हंसी-खेल नहीं। अधिक अवस्था तो ऐसी ही होती है जिसमें हम इनके वश में रहते हैं। इस समस्या को सुलझाने के लिये आर्य-विचारकों ने 'भोग-योनि' और 'कर्म-योनि' के सिद्धान्त की कल्पना की थी। आत्म-तत्त्व के विकास की एक अवस्था तो वह है जिसमें हम इन मनोवेगों में से बचकर निकल ही नहीं सकते, कार्य-कारण के अटल नियम की तरह इनके घात-प्रतिघातों में थपेड़े खाते ही रहते हैं। यह अवस्था 'भोग-योनि' कहाती है। इसमें हम कार्य करने में स्वतंत्र नहीं। जो कर्म हैं, अवश्यंभावी हैं। कर्म कौन से? वही--काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, मत्सरता आदि मनोवेगों द्वारा प्रेरित कर्म। पशु-योनि भोग-योनि है। इस योनि में कर्म का सिद्धान्त बिलकुल कार्य-कारण के भौतिक-नियम की तरह अटल कार्य करता है। ये योनियां अनन्त हैं। अनन्त इसलिये हैं क्योंकि कार्य-कारण के नियम के अनुसार चलते हुए काम, क्रोध, लोभ मोह का अन्त में अवश्यंभावी परिणा क्या हो सकता है--यह पाठ आत्म-तत्त्व में पूरी तरह से बैठ जाय, समा जाय, किसी के कहने-सुनने से नहीं, अपने अनुभव से उसमें रच जाय कि ये मार्ग एक ऐसे चक्र को चला देते हैं जिसका कहीं अन्त नहीं--इस पाठ को इन योनियों में जा-जाकर अनुभव द्वारा हृदयंगम करने के लिये ये योनियां अनन्त हैं। मनुष्य-जन्म कर्म-योनि है। कर्म-योनि इसलिये क्योंकि इस योनि में कर्म आत्म-तत्त्व को कार्य-कारण के अटल नियम की तरह नहीं चिपटता। भोग-योनियों में से गुजरने के बाद आत्म-तत्त्व पर यह अमिट छाप तो पड़ चुकी होती है कि कर्म के बन्धनों में से निकलने का रास्ता काम-क्रोध-लोभ-मोह, आत्मतत्त्व के इन बन्धनों को काट देना है। मनुष्य की इस कर्म-योनि में आकर हमारे हाथ में वह शस्त्र आ जाता है जिससे हम कर्म के बन्धनों को, अर्थात् कर्म की 'अवश्यंभाविता' और 'चक्र' को काट सकते हैं, परन्तु हम इसका लाभ उठाते हैं या नहीं, यह दूसरी बात है। जो मनुष्य मनुष्य-जन्म को एक दुर्लभ अवसर समझते हैं, वे इसका लाभ उठाते हैं, जो इस अवसर को खो देते हैं, वे चौरासी लाख योनियों में फिर से यह सीखने के लिये चल देते हैं कि काम-क्रोध आदि के वश में पड़े रहने का परिणाम क्या होता है! यह बात ठीक है इन योनियों में जाकर इस बात का ज्ञान नहीं होता कि किस कारण का कौन-सा फल मिल रहा है, न मनुष्य-जन्म में ही पता होता है कि किस कर्म का क्या परिणाम है--परन्तु इससे कर्म के सिद्धान्त में कोई बाधा नहीं पहुंचती। कर्म की पाठशाला में से आत्म-तत्त्व एक बहुत लम्बे रास्ते को तय करता हुआ गुजर रहा है। इस लम्बे रास्ते में यह जो अनुभव प्राप्त करता है वे इसकी 'अवचेतना' (Sub-conscious self) के हिस्से होते जाते हैं। आज का मनोविश्लेषणवाद कहता है कि हमारी सब प्रेरणाओं का मूल-स्रोत यही 'अवचेतन'-मन है। भिन्न-भिन्न जन्मों के अनुभव--उनकी अप्रत्यक्ष स्मृति--आत्म-तत्त्व के इसी 'अवचेतन' का निर्माण करते चले जाते हैं। हम भिन्न-भिन्न योनियों में काम-क्रोध-लोभ-मोह आदि के जिन अनुभवों में से गुजरते हैं, वे अनुभव हमारी 'अवचेतना' के हिस्से होते चले जाते हैं, और हमारी 'चेतना' को काम-क्रोध आदि के बुरे परिणामों के--किस कारण का कौन-सा कार्य है--यह जानने की अवश्यकता नहीं रहती, उन परिणामों का स्वाभाविक ज्ञान हमारी 'अवचेतना' का अंग बन जाता है और वही 'अवचेतना' हमारे बिना जाने हमारी 'चेतना' को प्रेरित किया करती है।

हां, तो हम कह रहे थे कि भोग-योनि में कार्य-कारण का नियम काम करता है, कर्म-योनि में कर्म का सिद्धान्त। भोग-योनि में आत्म-तत्त्व कर्म करने में स्वतंत्र नहीं होता, कर्म-योनि में स्वतंत्र होता है। कर्म का सिद्धांत मूलतः भोग-योनि का नहीं, कर्म-योनि का सिद्धांत है। इस सिद्धांत की आत्मा यह नहीं है कि हम कर्मों के बन्धनों से बंधे हुए हैं, इस सिद्धांत की आत्मा यह है कि यद्यपि हम पिछले जन्म-जन्मान्तर के कर्मों के अथाह बोझ को लिये खड़े हैं तब भी आत्मा अपने निजी रूप में कर्म करने में स्वतंत्र है, और यह स्वतंत्रता का अवसर इसे मनुष्य जन्म में ही मिलता है। मनुष्य-जन्म कर्म-भूमि है। इस एक जन्म में इतना सामर्थ्य है कि हम पिछले सभी जन्मों के 'संचित' कर्मों को इस जन्म के 'क्रियमाण'-कर्म से बदल सकते हैं।

('आर्य संस्कृति के मूलतत्त्व' ग्रंथ से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला-12

शंकर और दयानन्द

-महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती-

श्री शंकर ने वेदान्त आधार प्रस्थान त्रयी को माना है- तीन प्रकार के ग्रन्थों को। इन में पहली प्रकार के ग्रन्थ हैं उपनिषद्, फिर गीता, तब ब्रह्म सूत्र। जिस प्रकार आर्य समाज वेद को सबसे ऊँचा मानता है उसी प्रकार वेदान्ती उपनिषदों को सबसे ऊँचा मानते हैं, परन्तु उपनिषद् वेद के विरुद्ध तो नहीं हैं, वे या तो वेद का भाग हैं, अथवा उसके आध्यात्मिक ज्ञान की व्याख्या। वेद में प्रत्येक प्रकार का ज्ञान है और सभी विद्यायें, उपनिषदों में केवल आध्यात्मिक ज्ञान है केवल ब्रह्म विद्या।

इस ब्रह्म विद्या का महत्व क्या है यह इस बात से समझिये, कि केवल भारत वर्ष के ऋषियों, महात्माओं को ही नहीं, दूसरे देशों और दूसरे धर्मों के लोगों को भी इस ने मोहित किया है।

आज कई वर्ष पूर्व औरंगजेब के भाई दारा शिकोह ने जब उपनिषदों का कुछ भाग सुना तो ऐसा मोहित हुआ कि छः मास तक प्रतिदिन उपनिषदों की कथा सुनता रहा। उपनिषदों पर उसे ऐसी श्रद्धा हुई कि काशी से ब्राह्मणों को बुलाकर उस ने उनका फारसी में अनुवाद किया। केवल दाराशिकोह पर ही नहीं उसकी बहिन जेबुन्निशा को भी उपनिषदों से श्रद्धा हुई। उस ने फारसी के उपनिषद् पढ़े। उन के ज्ञान से उसके मन में जो शान्ति जाग उठी और जो जागृति उत्पन्न हुई उसके सम्बन्ध में एक कथा प्रसिद्ध है। उस समय आज कल की भांति शीशे नहीं होते थे। आजकल तो स्त्रियों के अतिरिक्त कालिजों के नवयुवक भी जेब में कंघी और शीशा लिये फिरते हैं। उस समय शीशे केवल धनिकों और राजाओं के पास होते थे। औरंगजेब के पास भी चीन का एक व्यापारी एक शीशा लाया। औरंगजेब ने वह शीशी जेबुन्निशा को दे दिया। जेबुन्निशा को शीशी बहुत प्रिय लगा। उसने अपने कमरे में संभाल कर रख दिया। एक दिन वह स्नान के पश्चात् धूप में बैठी थी। शीशा देखने का विचार आया तो लौण्डी से बोली, 'अन्दर जा कर चीन का वह शीशा ले आओ।' लौण्डी गई शीशे को उठाकर ला रही थी कि अपना मुख उसमें देखने लगी। ध्यान था शीशे की ओर, ठोकर लगी, गिर गई, शीशा टूट गया और डर के मारे थर थर काँपने लगी। इतनी अमूल्य वस्तु, उसने असावधानी में तोड़ दी, क्या जाने अब जेबुन्निशा क्या दण्ड देगी। इसी भय से उसका हृदय काँप उठा। जहाँ खड़ी थी वहीं खड़ी रही, भय मानो उसे व्याकुल किये देता था। जेबुन्निशा ने एक और लौण्डी को भेजा कि जाकर देख कि जिस लौण्डी को शीशा लेने के लिए भेजा था वह अब तक आई क्यों नहीं। लौण्डी ने वापस आकर डरते हुए कहा, 'राजकुमारी! वह शीशा तो टूट गया।' राजकुमारी को उपनिषद् का ज्ञान याद आ गया। हँसते हुए बोली-

अज ख़ता आयनाये चीनी शकस्त।
ख़ूब शुद कि सामाने ख़ुद बीनी शकस्त।।

(भूल से चीनी शीशा टूट गया तो अच्छा हुआ, विलासिता का सामान समाप्त हो गया)

यह प्रभाव! यह शान्ति देने वाला प्रभाव जेबुन्निशा पर। और इस फारसी अनुवाद से एक फ्रेंच विद्वान् ने उपनिषदों को लैटिन भाषा में अनुवाद किया। लैटिन से उसका अनुवाद जर्मनी में हुआ तो योरप की अन्य अनेक भाषाओं में। शौपनहार ने जब इसे पढ़ा तो पुकार कर कहा, मुझे ने केवल जीने का आश्रय मिल गया है, अपितु मरने का आश्रय भी मिल गया है।'

यह है उपनिषदों और उनके ब्रह्म ज्ञान का महत्व।

परन्तु उपनिषदों में क्या है? उपनिषदों के ज्ञान को जिन मुसलमान सन्तों ने प्राप्त किया उन्होंने अपने यहाँ एक नवीन मत आरम्भ किया, जिसे सूफी मत कहते हैं। वेदान्त का फारसी अनुवाद 'तसूफ' है वेदान्त का 'मोतो'। इन सूफियों ने तीन शब्दों में बताया कि जिस ज्ञान की वे बातें करते हैं उसमें क्या है। ये तीन शब्द हैं-चे-चूँ-चिरा। इनका अर्थ है क्या? क्यों? और कैसे? उपनिषद् बताते हैं कि मैं कौन हूँ? क्यों आया हूँ? कहाँ जाऊँगा?

परन्तु आज इन प्रश्नों के सम्बन्ध में विचार करने का अवकाश किसको है? आज तो यह दशा है कि-

आप अपने आपको ढूंढता हूँ मैं।
मुझको ही मेरा पता नहीं मिलता।।

और इसलिये नहीं मिलता कि ढूँढने का या तो प्रयत्न नहीं होता, अथवा उल्टे मार्ग से होता है। अपने आपको ढूँढने का प्रयत्न और प्रयत्न का ठीक मार्ग उपनिषदों का विषय है। याज्ञवल्क्य जब संन्यास लेने लगे तो लोगों ने पूछा, 'किस लिए आप संन्यास लेते हैं?' याज्ञवल्क्य बोले, 'एक तो इसलिये कि एक विशेष आयु के पश्चात् संन्यास आश्रम में चले जाना आर्य मर्यादा है, दुसरे इसलिये कि आत्मा के दर्शन कर सकूं, क्योंकि आत्मा के दर्शन किये बिना जो मर जाता है, उसका महानाश होता है।' और यह बात केवल याज्ञवल्क्य ऋषि ने ही नहीं कही, दूसरे ऋषि और महात्माओं ने भी कही है। धन उपार्जन करना चाहते हो तो करो, भवन निर्माण करना चाहते हो तो अवश्य करो। सन्तान, शक्ति, शासन जिसको इच्छा है उसे प्राप्त करो, यत्न करने से सब कुछ मिलता है। परन्तु सुनो! सुनो, सुनो! ये सब वस्तुयें नष्ट होने वाली हैं, यदि तुमने आत्मा को नहीं जाना तो सर्वनाश हो जायेगा।

महर्षि प्रजापति ने जब यह बात कही, जब घोषणा की कि आत्मा को जाने बिना सर्वनाश होता है तब देवताओं के नेता इन्द्र और राक्षसों के नेता विरोचन दोनों उनके पास गये, बोले, 'हम आत्मा को जानना चाहते हैं।' प्रजापति ने कहा, 'पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य धारण करके मेरे पास आश्रम में रहो उसके पश्चात् बात करूँगा।'

आजकल किसी को ऐसी बात कहिये तो वह कहेगा कि घर में बैठो- मुझे आत्मा को नहीं जानना है जिसके लिए २५ वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़े। एक दिन मैं आर्य समाज हनुमान रोड में ठहरा था। एक दिन पूर्व आत्मा के संबन्ध में भाषण भी दिया था। प्रातःकाल के समय द्वार पर एक नवयुवक आकर खड़ा हो गया, कोट पतलून बूट पहने द्वार पर खड़ा बोला, 'स्वामी जी! नमस्ते।' मैंने कहा, 'नमस्ते मेरे भाई! कहो मैं तुम्हारी क्या सेवा करूँ?' वह बोला, 'रात्रि को आप आत्मा की बात कह रहे थे न, मेरे हृदय पर उसका बहुत प्रभाव हुआ। मैं आत्मा को जानने के लिए आया हूँ।' मैंने कहा, 'वहाँ द्वार पर खड़े खड़े ही आत्मा का दर्शन करना चाहते हो?' वह बोला, 'जी मुझे दफ्तर जाना

है, समय बहुत थोड़ा है, आप शीघ्र बात दीजिये।' मैंने कहा, 'भोले भाई, आत्मा का दर्शन करना आसान नहीं, उसमें बहुत समय लगता है।' वह बोला, 'यह आप किसी प्राचीन समय की बात कर रहे हैं, विज्ञान ने इतनी उन्नति कर ली, संसार इतना आगे बढ़ गया, एक स्विच दबाने से सारे मकान की बत्तियाँ जल जाती हैं। भारतवर्ष के लोग क्या कोई ऐसा उपाय नहीं खोज सके कि झट आत्मा के दर्शन हो जायें।' मैंने कहा, 'योगियों ने बहुत कुछ किया है, परन्तु स्विच से बत्तियाँ जलने की जो बात तुम कहते हो उससे पूर्व क्या करना पड़ता है, यह भी जानते हो, स्विच दबाने से बत्तियाँ जलती अवश्य हैं, परन्तु उससे पूर्व एक पावर हाउस तैयार करना पड़ता है। पावर स्टेशन से अपने घर तक तारें लगानी पड़ती हैं। ठीक विधि से उन्हें जोड़ना पड़ता है। फिर बल्ब लगाने पड़ते हैं। पावर स्टेशन से बिजली आये उसके लिए शुल्क देना पड़ता है। सबकुछ होने के पश्चात् स्विच दबाने से बत्तियाँ जलती हैं। तुम भी उस महान् पावर स्टेशन से अपनी तार जोड़ लो, अपने बल्ब ठीक प्रकार से लगा लो, उसके पश्चात् जब भी स्विच दबाओगे, तब प्रकाश होगा अवश्य। तारें लगाये बिना स्विच को एक बार नहीं सहस्रोंबार दबाते रहो, न कमरे की बत्ती प्रकाशित होगी न मन की।'

ऐसे हैं आज के लोग, वे केवल स्विच दबाना चाहते हैं, तार जोड़ना नहीं चाहते। उनकी इच्छा है कि आत्म दर्शन उन्हें कोई घोल कर पिला दे। परन्तु मैं क्या करूँ यह घोल कर पिलाने की वस्तु नहीं यह तो तप से प्राप्त करने की वस्तु है। बहुत लम्बा तप करना पड़ता है इसके लिए। बहुत यत्न करना पड़ता है।

इसलिए प्रजापति ने इन्द्र और विरोचन को कहा, '२५ वर्ष तक ब्रह्मचारी बन कर मेरे आश्रम में रहो।' रहे वे दोनों। २५ वर्ष पश्चात् दोनों ने पूछा, 'आत्मा क्या है?' प्रजापति बोले, 'उस तालाब में जाकर देखो।' दोनों ने तालाब में देखा, अपना मुख दृष्टिगोचर हुआ। दोनों ने समझा यही आत्मा है। दोनों अपने घरों को वापस चल पड़े।

अपना आप देखने की इस बात से एक चुटकुला याद आ गया। पूर्वी अफ्रीका में कम्पाला नाम का एक सुन्दर नगर है आठ पहाड़ियों पर बना हुआ। एक पहाड़ी पर वहां आर्य समाज भी बना है। बहुत सुन्दर स्थान है। वहां कम्पाला में कुछ हिन्दुस्तानी हैं, कुछ अंग्रेज, बहुत से हब्शी। विचित्र प्रकार के है वे लोग, दाढ़ी है न मूंछ। सिर के बाल भी नहीं। वहां एक चोटी या दो चोटी बनाने का झगड़ा नहीं करना पड़ता। मैंने उनको देखा तो पूछा, 'क्या तुमने कभी शीशा नहीं देखा है?' वे बोले, 'हां! देखते हैं।' मैंने पूछा, 'तुम सुन्दर किसको समझते हो?' वे बोले, 'जो सबसे काला हो, जिसके होंठ सबसे मोटे हों।' मैंने हंसते हुए कहा, 'मेरे संबन्ध में तुम्हारा क्या विचार है?' वे बोले, 'तुम अंग्रेजों की अपेक्षा सुन्दर हो, हमारी अपेक्षा नहीं।' तो वे लोग अपने सौन्दर्य पर मस्त हैं।

('शंकर और दयानन्द' से, क्रमशः)

काव्यायन

महात्मा गाँधी

जागृत भाव स्वदेसिन मैं कियो
एकता को बर बंधन बाँधी।
शान्ति सुबारि दै शान्त कियो
अधिकारिन के अधिकार की आँधी।
स्वत्व स्वराज के हेत ब्रजेश
बिसेस कै धंधन की धुनि धाँधी।
आपनो जीवन दान दयो निज
देस को धन्य महातमा गाँधी।।

सोबत सों कौन यों उचाटतो हमारी नींद
आछे उपदेस दै धराबतो हिये को धीर।
कौन कूट नीति की अनीति की यों पोल खोलि
जेल खेल बीच मैं भरावतो को भारी भीर।
सासन सुधार को ब्रजेश भार लेतो कौन
करतो प्रचार को यों खादी को पवित्र चीर।
जागृति औ एकता दै देस को निवाहतो को
माननीय गाँधी सों हमारे जो न होतो बीर।।

❑राघवेन्द्र शर्मा त्रिपाठी 'ब्रजेश'

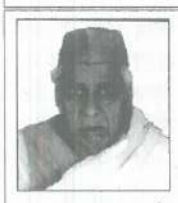

अमृत महोत्सव

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

अमृत महोत्सव स्वतंत्रता का, हमको बन्धु मनाना है।
देश-प्रगति संग अन्तरिक्ष में, ज्ञान विज्ञान दिखाना है।।

अक्षुण्ण हो आजादी अपनी, स्वतंत्रता पर ध्यान रहे,
निज स्वराष्ट्र पर आगत बाधा, दिखा चौकसी नित्य दहे।
सत्यमेव जयते के पथ का, हर बच्चा अनुसरण करे,
वृक्षारोपण कर वसुधा को पहनाएँ पट हरे भरे।
पर्यावरण शुद्ध हो एवं, नदियाँ विमल बनाना है।
अमृत महोत्सव स्वतंत्रता का, हमको बन्धु मनाना है।।

सीमा रहें सुरक्षित सारी, आँख न रिपु दिखला पाए,
उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम, सौख्य शान्ति ध्वज लहराए।
अन्न लिए खेतों में फसलें, सुषमा संग सदा झूमें,
सुख समृद्धि सम्पन्न नारि नर, हर्ष हृदय में भर घूमें।
सबका ही विश्वास प्राप्तकर, सर्व विकास दिखलाना है।
अमृत महोत्सव स्वतंत्रता का, हमको बन्धु मनाना है।।

कोरोना-विपदा से लड़ना, उसका अन्त जरूरी है,
पहन मास्क सभी जन रक्खें, दो मीटर की दूरी है।
छोड़ें हाथ मिलाना सब जन, नमस्कार करबद्ध करें,
टीकाकरण कराकर सब जन, सारा दारुण दुःख हरें।
अपना योगाभ्यास सभी को, अपना स्वास्थ्य बनाना है।
अमृत महोत्सव स्वतंत्रता का, हमको बन्धु मनाना है।।

–चन्द्रा मण्डप, 370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

चिर विराम

❑रामा आर्य 'रमा'

प्रिय तुम चले गये तो निपटे,
जैसे सारे जग के काम।
अन्तर्मन है खाली-खाली,
जैसे पाया चिर विराम।

मन करता है एक गुहा में,
बैठूँ कुछ यादें लेकर।
खोलूँ गांठे धीरे-धीरे,
मध्यम-मध्यम सांसें लेकर।
कैसे किया सबेरा तुमने,
कैसे आई यह शाम।

तुमने अश्वमेध की वल्गा,
आगे बढ़कर थामी थी।
सबसे लड़कर पायी तुमने,
एक देश की थाती थी।
उजड़े वन में बरसाया तुमने,
अमृत है निष्काम।

चांदी जैसी हँसी व्यंग्य स्वर,
जैसे छनन-छनन छन-छन।
उत्सव पर्व आदि में भी,
महक उठे घर आंगन।
मधुपान करें सब मन भर के,
अद्भुत जो बिन दाम।

भला भूल पायेंगे कैसे,
पौधे अपने माली को।
सिंचित किया सदा है जिसने,
ममता से से हर डाली को।
फूली फली आज है बगिया,
अति उत्तम अभिराम।

–417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

फहराइये

❑डॉ. कैलाश निगम

जग के नियंता
आ के स्वयं मिलेंगे द्वार
हनुमान जैसी
भक्ति-भावना बढ़ाइये।
सुरसरि आकर
कठौती में करेगी वास
रविदास जैसी
आप अलख जगाइये।
प्रेम की सुगंध बिखराओ
निज जीवन से
शोक वाटिका को
हर्ष वाटिका बनाइये।
दानवीयता के वक्ष पर
मानवीयता का
केतु आप शौर्य की
भुजा से फहराइये।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

धर्मरथी

❑डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'

तभी सारथी ने राघवेन्द्र से कहा कि–"इस
स्यन्दन को कीजिए सुशोभित हे वीर्यवान।
निशिचर–हीन मही कीजिए सीता–सनाथ,
दम्भ का जघन्य–दुर्ग तोड़िए कृपानिधान"।
सुनके विनय हर्ष–शकुन जगे अनेक,
राम ने की थी रथ की परिक्रमा, किया प्रणाम।
स्वर्णकान्त–रथ समारूढ़ हो सरोज–नाभ,
करने लगे स्वतेज से त्रिलोक कान्तिमान।।

दिव्य–स्थारूढ़ राम को विलोक भालु–कीश,
अमित उठाह भरे धाये वेग से अपार।
हर्ष–अतिरेक–जन्य गूँज उठी 'हूह–हूह'
शंकित हुई विषम–राक्षस–अनी की धार।
हनुमत–घात से समाहत हो लंकापति,
करने लगा समीत आसुरी–माया–प्रसार।
भेद रघुपति ने दिया समस्त माया–जाल,
हर्षित हुए सौमित्र–वीर–केशरीकुमार।।

–538क/88, त्रिवेणी नगर, लखनऊ–20

हर्ष–चतुष्पदी

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

सुबह उठकर गीत सुनाता हूँ,
गीत गाकर गुनगुनाता हूँ,
फिर नहाने हेतु जल गुनगुनाता हूँ,
गुनगुने पानी से मैं प्रातः नहाता हूँ।

है अयोध्या धाम मेरा, देश भारतवर्ष है।
आज योगी की वजह, इसका अमित उत्कर्ष है।
आज जनजन में यही होता विचार विमर्श है,
नाम में बाँके बिहारी, काव्य में वह 'हर्ष' है।।

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

तेरा आसन सबसे ऊँचा सबसे महान!

❑रामधारी सिंह 'दिनकर'

संसार पूजता जिन्हें तिलक, रोली, फूलों के हारों से,
मैं उन्हें पूजता आया हूँ बापू! अब तक अंगारों से।
अंगार विभूषण यह उनका, विद्युत पीकर जो आते हैं,
ऊँघती शिखाओं की लौ में, चेतना नई भर जाते है।

अंगार हार उनका, जिनकी सुन हाँक समय रुक जाता है,
आदेश जिधर का देते हैं, इतिहास उधर झुक जाता है।
अंगार हार उनका कि मृत्यु भी जिनकी आग उगलती है,
सदियों तक जिनकी सही हवा के वक्षस्थल पर जलती है।

पर तू इन सबसे परे, देख तुझको अंगार लजाते हैं,
मेरे उद्वेलित-ज्वलित गीत सामने नहीं हो पाते हैं।

बापू ! तू वह कुछ नहीं, जिसे ज्वालाएँ घेरे चलती हैं,
बापू! तू वह कुछ नहीं, दिशाएँ जिसको देख दहलती हैं।
तू सहज शान्ति का दूत, मनुज के सहज प्रेम का अधिकारी,
दृग में उंड़ेलकर सहज शील देखती तुझे दुनिया सारी।

धरती की छाती से अजस्र चिर-संचित क्षीर उमड़ता है,
आँखों में भर कर सुधा तुझे यह अम्बर देखा करता है।
कोई न भीत; कोई न त्रस्त; सब ओर प्रकृति है प्रेम-भरी,
निश्चिन्त जुगाली करती है छाया में पास खड़ी बकरी।

भू पर तो आते वे भी जो जीता या हारा करते हैं,
मिट्टी में छिपे अनल को अपनी ओर पुकारा करते हैं।
जीते लपटों के बीच मचा धरणी पर भीषण कोलाहल,
जाते-जाते दे जाते हैं भावी युग को निज तेज-अनल।

पर तू इन सबसे भिन्न ज्योति, जेता जेता से महीयान,
कूटस्थ पुरुष! तेरा आसन, सबसे ऊँचा सबसे महान।

सब ने देखे विद्वेष-गरल, तू ने देखा अमृत प्रवाह,
सबने बड़वानल लिया, लिया तू ने करुणा-सागर अथाह।
नर के भीतर की दुनिया में है कहीं अवस्थित देवालय,
सदियों में कभी-कभी कोई मर्मी पाता जिका परिचय।

दुनिया ने चाहा प्रश्न करे, क्या कहिये इस दीवाने को?
दो बूंद सुधा लेकर निकला है जग की आग बुझाने को।
पर, तू न रुका; सीधे अपने निर्दिष्ट पन्थ पर जा निकला,
पद-चिह्नों को देखते हुए पीछे-पीछे इतिहास चला।

जानें, कितने अभिशाप मिले, कितना है पीना पड़ा गरल,
तब भी नयनों में ज्योति हरी, तब भी मुख पर मुसकान सरल।
सामान्य मृत्तिका के पुतले, हम समझ नहीं कुछ पाते हैं,
तू ढो लेता किस भाँति पाप जो हम दिन-रात कमाते हैं?

कितना विभेद! हम भी मनुष्य, पर, तुच्छ स्वहित में सदा लीन,
पल-पल चंचल, व्याकुल, विषण्ण, लोहू के तापों के अधीन।
पर, तू तापों से परे, कामना-जयी, एकरस, निर्विकार,
पृथ्वी को शीतल करता है, छाया-द्रुम-सी बाँहें पसार।

विस्मय है, जिस पर घोर लौह-पुरुषों का कोई बस न चला,
उस गढ़ में कूदा दूध और मिट्टी का बना हुआ पुतला।
सारे संबल के तीन खण्ड, दो वसन, एक सूखी लकड़ी,
सारी सेनाओं का प्रतीक पीछे चलने वाली बकरी।

दानव की आँखों में अंशक अपनी आँखें डालते हुए,
कुछ घृणा कलह से नहीं, प्रेम से ही उसको सालते हुए,
बापू आगे जा रहे, जहर की बाढ़ निघटती जाती है,
सहमी-समी सी अनी तिमिर की पीछे हटती जाती है।

लज्जित मेरे अंगार; तिलक माला भी यदि ले आऊँ मैं,
किस भांति उठूँ इतना ऊपर? मस्तक कैसे छू पाऊँ मैं।
ग्रीवा तक हाथ न जा सकते, उँगलियाँ न छू सकतीं ललाट।
वामन की पूजा किस प्रकार पहुँचे तुम तक मानव विराट?

जिन्हें साहित्य भूषण सम्मान मिला

'आर्य लोक वार्ता' को निरन्तर अपनी लेखनी का प्रसाद देने वाले श्री दयानन्द जड़िया 'अबोध एवं पिलखुआ के प्रख्यात लेखक डॉ.चन्द्रपाल शर्मा को हिन्दी संस्थान का 'साहित्य भूषण' सम्मान प्राप्त करने पर आर्य लोक वार्ता उन्हें हार्दिक बधाई देता है तथा शुभकामनाएँ व्यक्त करता है।

श्री दयानन्द जड़िया 'अबोध' लखनऊ नगर के ही नहीं प्रदेश व देश के जाने माने वरेण्य साहित्यकार व कवि है। 'अबोध' जी ने जितने ग्रंथ प्रकाशित किये हैं और जितने उनको सम्मान प्राप्त हुए हैं तथा जितने नये छन्दों का आविष्कार किया है, उनकी गणना नहीं की जा सकती है। इतने विपुल परिमाण में साहित्य सृजन करने वाले वयोवृद्ध लेखक को सम्मानित करना परमावश्यक ही नहीं, अपरिहार्य हो जाता है। 'अबोध' जी को हिन्दी संस्थान उत्तर प्रदेश ने सम्मानित करके अपने कर्तव्य का निर्वाह किया है।

डॉ.चन्द्रपाल शर्मा के शताधिक लेख तथा कई दर्जन गंथ प्रकाशित हैं। वे इतने बड़े मौलिक लेखक हैं कि उनकी गणना आधुनिक साहित्य के महान् लेखकों में की जाती है। 'सीता निर्वासन' प्रसंग की निरर्थकता को प्रकाशित करके उन्होंने हिन्दी साहित्य को नवीन ऊर्जा और वातावरण प्रदान किया है। वे 'साहित्य भूषण' सम्मान से कहीं अधिक सम्मान के पात्र तथा अधिकारी हैं। डॉ. चन्द्रपाल शर्मा ने उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के निर्णायक मण्डल के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि 'उनकी दृष्टि मेरी ओर पड़ी, सन् २०१८ में भी निर्णायक मण्ड ने मेरी पुस्तक 'मानस चिन्तन' को ७५ हजार रुपये का 'महावीर प्रसाद पुरस्कार' दिया था। विद्वानों का संतोष मिलना ही पुरस्कार व सम्मान है। पुरस्कार राशि गौण हो जाती है।'

ज्ञातव्य है कि 'साहित्य भूषण' सम्मान में उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा सम्मान पत्र के साथ ही दो लाख रुपये की राशि भी पुरस्कार के रूप में दी जाती है।

उत्तराखण्ड-समाचार

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर

आर्य वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार में स्वतंत्रता समारोह बड़े हर्ष और उल्लास पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर सायं वृक्षारोपण से हुआ। मुख्य अतिथि श्री के.के.मिश्रा (ए.डी. एम.) द्वारा यज्ञशाला के बाहर गुरु विरजानन्छ उद्यान में रुद्राक्ष का पौधा लगाया गया। इसके पश्चात महात्मा नारायण स्वामी सभागार में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें राजकीय बालिका इण्टर कालेज की छात्राओं द्वारा देशभक्ति के गीत एवं सामूहिक नृत्य कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रहा। आश्रम प्रधान श्री दिनेश कुमार पाण्डेय ने मुख्य अतिथि एवं सभी उपस्थित जनों का स्वागत किया एवं आश्रम के वरिष्ठ विद्वान साधक डॉ.सुरेन्द्र कुमार शर्मा जी को उनके द्वारा जिला कारागार के बन्दियों को यज्ञ प्रवचन एवं सत्संग द्वारा उनके जीवन सुधार की दिशा में किये जा रहे निरन्तर प्रयास एवं आश्रम में वैदिक प्रवक्ता के रूप में की जा रही उत्कृष्ट सेवाओं के लिए तथा आश्रम के ही वरिष्ठ साधक श्री दया सिंह जी को उनकी वैदिक प्रवक्ता के रूप में की जा रही उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मान पत्र, नगद राशि एवं शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की समाप्ति पर मन्त्री श्रीमती सविता शर्मा जी ने सभी का धन्यवाद किया।

१५ अगस्त को प्रातः ६ बजे से गुरु विरजानन्द उद्यान में आश्रम प्रधान श्री पाण्डेय जी द्वारा ध्वजारोहरण किया गया। आश्रम के ब्रह्मचारियों एवं साधिकाओं द्वारा वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना एवं राष्ट्रगान आदि प्रस्तुत किये गये। *('स्वतिपंथा' से)*

सण्डीला-समाचार

आर्य समाज, सण्डीला

दिनांक ७ जुलाई २०२१ को आर्य समाज सण्डीला के तत्वावधान में पहली बार प्रदूषण नियंत्रण यज्ञ यात्रा का नगर में आयोजन हुआ। यह यात्रा बेनीगंज रोड, भुइंयादेवी मंदिर से प्रारम्भ होकर बांगरमऊ रोड तक गई। नगर के सैकड़ों लोगों ने बढ़चढ़ कर अत्यंत उत्साहपूर्ण वातावरण में यज्ञ में आहुति देकर भाग लिया। पूरे नगर का वातावरण यज्ञमय हो गया। चारों ओर मात्र वेदमंत्र एवं नारे ही सुनाई दे रहे थे। कार्यक्रम में श्रीमती विभा गुप्ता, विशुन दयाल शुक्ला, शरद चौरसिया, आलोक अस्थाना, नितिन शर्मा, विनोद, शिवाजी, प्रदीप गुप्ता एडवोकेट, शिवनारायण गुप्ता, मुकेश अग्निहोत्री, चमन विश्वकर्मा, सिद्ध प्रताप मौर्य, विनीत गुप्ता, विपिन गुप्ता आदि की विशेष उपस्थित रही।

लखनऊ-समाचार

प्रत्यूष-मंजरी की 25वीं वैवाहिक वर्षगाँठ

श्री प्रत्यूषरत्न पाण्डेय एवं श्रीमती मंजिरी पाण्डेय की २५वीं वैवाहिक वर्षगाँठ शरद पूर्णिमा के सुरम्य पर्व पर वैदिक यज्ञ के साथ मनाई गई। इस अवसर पर श्री प्रत्यूष की माता कवयित्री रामा आर्य 'रमा' एवं पिता श्री वी.एस.पाण्डेय तथा अन्य पारिवारिक जनों ने आशीर्वाद सुमनों की वृष्टि की तथा सफल वैवाहिक जीवन के लिए हार्दिक बधाइयाँ दीं। सम्पूर्ण कार्यक्रम वैदिक विद्वान् पं.सन्तोष कुमार वेदालंकार ने सम्पन्न कराया। 'आर्य लोक वार्ता' की हार्दिक शुभकामना एवं बधाई।

लखनऊ-समाचार

आर्य समाज आदर्श नगर : जन्माष्टमी उत्सव

आर्य समाज आदर्श नगर के जन्माष्टमी पर्व पर वेद प्रचार का कार्यक्रम श्री रुद्रस्वरूप जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन भी श्री रुद्रस्वरूप जी ने ही किया।

इस अवसर पर सुप्रसिद्ध विद्वान व्याख्याता आचार्य श्री आनन्द पुरुषार्थी (होशंगाबाद) ने अपने उपदेशों से जनमानस को उद्वेलित किया। वैदिक यज्ञ आनन्द पुरुषार्थी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। स्थानीय आर्यजनों के अलावा अन्य आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भी कार्यक्रम में भाग लिया तथा इसकी भूरि भूरि सराहना की। प्रातःकाल से प्रारंभ होकर मध्याह्न तक चलने वाले इस आयोजन की परिसमाप्ति ऋषितंगर की सुरुचिपूर्ण व्यवस्था के साथ हुई। *(हरीश निझावन, प्रधान)*

पितृ पक्ष - श्राद्ध दिवस

श्री आत्मप्रकाश बत्रा सम्मानित

भारतीय समाज में प्रचलित पितृपक्ष एवं श्राद्ध की नई परिभाषा देते हुए आर्य समाज ने बताया कि जीवित माता-पिता तथा पितरों (वयोवृद्ध पितामह आदि) की सेवा तथा सम्मान करना ही वास्तविक श्राद्ध है। इस दिशा में क्रियात्मक कदम लखनऊ में कई वर्ष पूर्व आर्य समाज राजाजीपुरम ने उठाया था। जीवित माता पिता तथा वयोवृद्ध पितामह आदि के सम्मान की समुचित एवं सुंदर व्यववस्था प्रारंभ की। वर्ष में एक दिन यह कार्यक्रम आर्य समाज राजाजीपुरम में आज भी सुव्यवस्थित ढंग से मनाया जाता है। अच्छी बात यह है कि आर्य समाज राजाजीपुरम से प्रेरणा प्राप्त कर अन्य अनेक आर्य समाजों में भी इस परम्परा की शुरुआत हो गयी है।

इस वर्ष लखनऊ की सर्वप्रमुख नगर आर्य समाज रकाबगंज द्वारा जिन वरिष्ठ जनों को सम्मानित किया गया उनमें आर्य समाज आदर्श नगर के समर्पित सदस्य, पूर्व प्रधान श्री आत्मप्रकाश बत्रा को सम्मानित किया गया। ज्ञातव्य है कि श्री आत्मप्रकाश बत्रा आत्म प्रचार से दूर रहने वाले आर्य समाज के ऐसे ईमानदार कार्यकर्ता हैं, जो अपनी मिलनसारिता, सच्चरित्रता तथा शालीनता से पहचाने जाते हैं। समाज के सदस्यों को एकता के सूत्र में आबद्ध रखने तथा स्वयं किसी श्रेय की कामना न करने वाले श्री बत्रा का चारित्रिक वैशिष्ट्य है। बत्रा जी को सम्मानित किये जाने पर 'आर्य लोक वार्ता' नगर आर्य समाज के पदाधिकारियों तथा कार्यक्रम के आयोजकों की सराहना करना अपना कर्तव्य समझता है।

इस अवसर पर बत्रा जी के साथ ही माननीय स्वामी वीरेन्द्र सरस्वती (आर्य समाज डालीगंज), श्रीमती बलवन्त खुराना (आर्य समाज चन्द्र नगर), रामगोविन्द ठाकुर (आर्य समाज इन्दिरा नगर), डॉ.भानु प्रकाश आर्य (आर्य समाज टिकैतराय), त्रिलोकी नाथ निगम (आर्य समाज रकाबगंज), उत्तम चंद अग्रवाल (आर्य समाज चौक) तथा पूर्व मेयर स्व.गिरिराज रस्तोगी परिवार को भी सम्मानित करके आर्य समाज रकाबगंज ने अपने कर्तव्य एवं दायित्व का निर्वाह किया। *(डोरीलाल आर्य)*

आर्य समाज राजाजीपुरम

संयमी-त्यागी राजनीतिज्ञों द्वारा राष्ट्र की रक्षा होती है

-आचार्य विश्वव्रत

वेद प्रचार मण्डल वेदमन्दिर राजाजीपुरम ने मण्डल के वार्षिकोत्सव पर दिनांक २ अक्टूबर २०२१ को अध्यक्ष आचार्य आनन्द मनीषी का ८८वाँ जन्म दिवस एवं राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन आनन्द-भवन, सी-१२७१, राजाजीपुरम में सफलता पूर्वक सम्पन्न किया। इस अवसर पर मनीषी जी ने विद्वानों व अतिथियों का स्वागत करते हुए पुत्र डॉ.अनूप कुमार, पुत्रवधू श्रीमती अन्नदा व परिजनों के साथ मुख्य यजमान बने। आचार्य विश्वव्रत शास्त्री के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ सम्पन्न हुआ। देवयज्ञ के पश्चात् राष्ट्ररक्षा सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए आचार्य जी ने देश, राष्ट्र एवं राज्य की व्याकरण सम्मत परिभाषा करके तीनों का अन्तर स्पष्ट करते हुए बताया कि संस्कृति के द्वारा राष्ट्र, सुदृढ़ सैनिकों द्वारा देश तथा सेवाभावी, संयमी तथा त्यागी राजनीतिज्ञों द्वारा राज्य की रक्षा होती है। सम्मेलन में वैदिक विद्वान् डॉ.सत्यकाम आर्य ने भी निर्धारित विषय पर महत्वपूर्ण व प्रभावशाली उद्बोधन दिया। श्रीमती प्रियंका शास्त्री व श्रीमती कमलेश सक्सेना के विषयानुकूल मधुर भजन हुए।

इस अवसर पर जिला वेद प्रचार संगठन के अध्यक्ष डॉ.भानुप्रकाश आर्य, आर्य समाज राजाजीपुरम के प्रधान श्री निरंजन सिंह, श्री हरिश्चन्द्र बत्रा, रमाकान्त सिंह, एम.बी.सक्सेना, डॉ.मंगलदेव त्रिवेदी, काशी प्रसाद शास्त्री आदि गणमान्य लोगों की सराहनीय उपस्थिति रही। अन्त में मनीषी जी ने आगन्तुकों के प्रति आभार प्रकट किया और शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

आर्य्य लोक वार्ता

'ऋत्विक्-मंडल'

(प्रतिवर्ष 1500 रु. या अधिक सहयोगकर्त्ता)

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, ज्वालापुर, **हरिद्वार**; विद्यासागर फाउण्डेशन, **मेरठ**; श्री अम्बिका प्रसाद एडवोकेट, **लखनऊ**; श्री आनन्द कुमार आर्य, टाण्डा, **अम्बेडकरनगर**; श्री पाल प्रवीण, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती कमलेश पाल, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती प्रमोद कुमारी, अलीगंज, **लखनऊ**; श्री अभिषेक, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती गीतांजलि, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मिनी स्वरूप, **नई दिल्ली**; कर्नल पाल प्रमोद, **मेरठ**; श्री अरविन्द कुमार, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती शालिनी कुमार, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, **लखनऊ**; डॉ.प्रशिषा, प्रधानाचार्या, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज, टाण्डा, **अम्बेडकरनगर**; श्रीमती मधुर भंडारी, **नई दिल्ली**; श्री पीयूष गुप्त, **सिंगापुर**; श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, **बरेली**; डॉ.सी.वी.पाण्डेय, सर्वोदय नगर, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; श्रीमती प्रमिला पाल, मवाना, **मेरठ**; श्री दीपक कुमार दर्शन, **लखनऊ**; श्री बी.एन.टण्डन, **बहराइच**; श्री अनूप टण्डन, **मेरठ**; डॉ.वेद प्रकाश बटुक, **मेरठ**; श्री नरेन्द्र भूषण, जानकीपुरम, **लखनऊ**; श्री आर. सी. यादव, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; चौधरी रणवीर, प्रधान, आर्य समाज, **सीतापुर**; श्रीमती मनीषा त्रिवेदी, **दुबई**; श्री अर्जुनदेव चढ्ढा, कोटा, **राजस्थान**; श्री नरसिंह पाल एडवोकेट, **लखनऊ**; श्रीमती मीना दीक्षित, गोमती नगर, **लखनऊ**; इं.जे.पी.अग्रवाल, गायत्रीलोक, कनखल, **हरिद्वार**; श्रीमती प्रियदर्शिनी मित्तल, **बंगलौर**; श्री आर.के.शर्मा, जानकीपुरम्, **लखनऊ**; श्री बाँके बिहारी 'हर्ष', अवध मोटर वर्क्स, **फैजाबाद**; श्रीमती रामा आर्य 'रमा', नेवाजगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मालती त्यागी, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती प्रियंका शर्मा, जानकीपुरम, **लखनऊ**; महात्मा प्रेममुनि, आर्य समाज, हसनगंज पार, **लखनऊ**; श्री आत्म प्रकाश बत्रा, आर्य समाज, आदर्श नगर, **लखनऊ**; श्री विश्वमित्र शास्त्री, आर्य समाज, अलीगंज, कुर्सी रोड, **लखनऊ**; श्री रण सिंह, आर्य समाज, चन्द्र नगर, **लखनऊ**; श्री रवीन्द्र त्यागी, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्री महेशचन्द्र द्विवेदी, विवेक खण्ड, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती कुमुद गुप्ता, अलीगंज, **लखनऊ**; आचार्य आनन्द मनीषी, राजाजीपुरम, **लखनऊ**; श्रीमती यशोदा शर्मा, जानकीपुरम्, **लखनऊ**; श्री कृष्ण स्वरूप चौधरी, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती सुधा चौधरी, गोमती नगर, **लखनऊ**; डॉ.सत्यकाम आर्य, जानकीपुरम, **लखनऊ**; श्री प्रदीप कुमार श्रीवास्तव एडवोकेट, निशात गंज, **लखनऊ**; श्री अरुण अमिता विरमानी, चन्द्रनगर, **लखनऊ**; डॉ. मनोरमा तिवारी, अलीगंज, **लखनऊ**; श्री राम प्रसाद श्रीवास्तव, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्री निशीथ कंसल, विवेकानन्द पुरी, **लखनऊ**; डॉ.भानु प्रकाश आर्य, **लखनऊ**; कर्नल चन्द्रमोहन गुप्त, अलीगंज, **लखनऊ**, श्री सुरेन्द्र कुमार यादव, रामचन्द्र मिशन परिसर, सीतापुर रोड, **लखनऊ**।

अत्यावश्यक सूचना

हम अपने उन उदारचेता दानदाता/सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद देते हैं, जो समय समय पर अपने कर्तव्य पालन की दृष्टि से 'आर्य लोक वार्ता' को आर्थिक सहयोग करते रहते हैं। वस्तुतः ऐसे उदारचेताओं ने ही 'आर्य लोक वार्ता' को २३ वर्षों से सतत जीवित जागृत एवं सचेष्ट बनाये रखा है। निश्चय ही 'आर्य लोक वार्ता' को दिया गया सहयोग वेद प्रचारार्थ होता है, जो एक पुण्य कार्य है।

बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ के 'आर्य लोक वार्ता' के खाता सं.४६६००१०००००६५० में जो भी सहयोग धनराशि आप जमा करते हैं, नम्र निवेदन है कि इसकी सूचना अवश्य दें ताकि आपको यथासमय प्राप्ति/रसीद भेजी जा सके।

-प्रधान सम्पादक

टाण्डा बना आर्यों का महातीर्थ

आर्य समाज टाण्डा के 130वें वार्षिकोत्सव पर होंगे भव्य कार्यक्रम

आर्य समाज टाण्डा, अम्बेडकरनगर के १३०वें वार्षिकोत्सव पर ज्ञान, भक्ति और कर्म प्रवाहित होने वाली धाराओं ने इसे एक महातीर्थ का रूप दे दिया है। दिनांक ९, १०, ११, १२ नवम्बर २०२१, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार को यह वार्षिकोत्सव डी.ए.वी.एकेडमी टाण्डा के प्रांगण में समारोह पूर्वक मनाया जायगा। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रख्यात विद्वान्, भजनोपदेशक तथा आर्य संन्यासी पधार रहे हैं।

वार्षिकोत्सव का शुभारंभ दिनांक ८ नवम्बर, २०२१ चन्द्रवार को कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य, प्रधान, आर्य समाज, टाण्डा (पूर्व कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) का ८६वाँ जन्मदिवस सायं ६ से ८.३० बजे मनाया जायगा जिसमें यज्ञ और प्रीतिभोज आयोजित है। इस उत्सव के संयोजक हैं डॉ.प्रशिषा मिश्रा, प्रधानाचार्या, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज, श्री अशोक कुमार पाण्डेय, प्रिंसिपल डी.ए.वी.एकेडमी एवं डॉ. अरुण आर्य, प्राचार्य आर्य कन्या महाविद्यालय, टाण्डा। कार्यक्रम का आयोजन डी.ए.वी.एकेडमी टाण्डा के प्रांगण में किया गया है।

दिनांक ९ नवम्बर, २०२१ प्रातः ७.३० से ९ बजे तक वैदिक यज्ञ का आयोजन होगा। आचार्या प्रियंवदा वेदभारती, प्राचार्या आर्ष कन्या गुरुकुल नजीबाबाद के नेतृत्व में गुरुकुल की वेदपाठी छात्राएँ यज्ञ का संचालन करेंगी। इसी तदुपरान्त भजनोपदेश एवं आध्यात्मिक प्रवचन के कार्यक्रम होंगे। अवसर पर श्रद्धेय स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण होगा, जिसमें ध्वजगीत का गायन मिश्रीलाल अर्य कन्या इण्टर कालेज की छात्राओं द्वारा किया जायगा।

अपराह्न १ से ४ बजे तक विशाल शोभा यात्रा निकाली जायगी। सायंकाल का कार्यक्रम ५.३० बजे से संध्योपासना से आरम्भ होगा तथा सायं 'भारत विश्वगुरु की ओर-आर्य समाज की भूमिका' पर स्वामी आर्यवेश जी (प्रधान, सार्वदेशिक सभा) का व्याख्यान होगा।

दिनांक १० नवम्बर, २०२१ को प्रातःकाल वैदिक यज्ञ, भजन, प्रवचन के अलावा अपराह्न ३ से ५ बजे तक नारी सशक्तीकरण सम्मेलन (वेदों में नारी) आयोजित होगा जिसकी अध्यक्षता श्रीमती अनीता कोठारी, राजस्थान करेंगी तथा मुख्य अतिथि होंगी श्रीमती रेखा मिश्रा, कोलकाता। मुख्य व्याख्याता के रूप में आचार्य डॉ.प्रियंवदा वेदभारती का व्याख्यान होगा। इस सम्मेलन की संयोजिका डॉ. प्रशिषा मिश्रा, प्रधानाचार्या मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज होंगी।

इसी दिन सायंकाल श्रीमती मीना आर्य धर्मार्थ न्यास की ओर से विद्वत् सम्मान समारोह आयोजित होगा

दिनांक ११ नवम्बर को प्रतिदिन की तरह ही वैदिक यज्ञ के पश्चात प्रवचन एवं भजनोपदेश के कार्यक्रम होंगे। शंका समाधान के लिए अपराह्न २ से ४ बजे तक अवसर दिया जायगा। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे श्री ज्वलंत कुमार शास्त्री तथा शंकाओं का समाधान आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय नई दिल्ली एवं पं. दीनानाथा शास्त्री द्वारा किया जायगा। सायंकाल के कार्यक्रम में संध्योपासना के पश्चात वेद सम्मेलन का आयोजन होगा जिसकी अध्यक्षता दिल्ली से पधारे आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय करेंगे।

१२ नवम्बर को प्रातः वैदिक यज्ञ की पूर्णाहुति होगी तदुपरान्त भजनोपदेश एवं प्रवचन के पश्चात ११ बजे से आर्य युवा सम्मेलन आयोजित होगा जिसकी अध्यक्षता पं.दीनानाथ शास्त्री करेंगे। अपराह्न १ बजे से २ बजे तक धन्यवाद ज्ञापन श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य, उपप्रधान तथा श्री योगेश कुमार आर्य, मंत्री आर्य समाज टाण्डा अमबेडकरनगर द्वारा किया जायगा तथा शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन होगा।

समारोह में अन्य आमंत्रित विद्वानों में पं.सत्यपाल सरल देहरादून, पं.केशव देव राजस्थान, स्वामी आदित्यवेश हरियाणा, पं.संजय सत्यार्थी पटना, आचार्य धनंजय शास्त्री दिल्ली, आचार्य पं.विश्वव्रत शास्त्री लखनऊ, आचार्य सत्य प्रकाश आर्य बाराबंकी पधार रहे हैं। इसके अतिरिक्त स्थानीय विद्वानों में पं.देव नारायण पाण्डेय, आचार्य ओम प्रकाश शास्त्री पुरोहित आर्य समाज टाण्डा की सेवाएँ उपलब्ध रहेंगी।

लखनऊ-समाचार

आर्य समाज चन्द्रनगर : महर्षि निर्वाण दिवस

आर्य समाज चन्द्रनगर, आलमबाग के तत्वावधान में दीपावली एवं महर्षि निर्वाण दिवस प्रातःकालीन यज्ञ से प्रारंभ होकर मध्याह्न तक मनाया जायगा। कार्यक्रम में विद्वानों के प्रवचन तथा भजनोपदेश होंगे। इस अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में लखनऊ जनपद की अन्य आर्य समाजों के प्रतिनिधगण भाग लेंगे। ऋषि लंगर के साथ समारोह सम्पन्न होगा। *(रण सिंह, प्रधान)*

आर्य समाज इन्दिरा नगर

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के तत्वावधान में वायुमंडल को प्रदूषण मुक्त तथा समाज को रोगों से बचाने के लिए वायुमंडल शुद्धि महामारी नियंत्रण राष्ट्र कल्याण अग्निहोत्र दिनांक १४ अक्टूबर २०२१ को आर्य समाज इन्दिरा नगर के सौजन्य से मंदिर पार्क, मकान नं.३५ के सामने, गुरुभारतीपुरम, सेक्टर ८, इंदिरा नगर में, सायं ३ बजे से ६ बजे तक सम्पन्न हुआ। *(डोरीलाल आर्य)*

आर्य समाज गोमती नगर

वायुमण्डल शुद्धि महामारी नियंत्रण राष्ट्र कल्याण अग्निहोत्र का आयोजन दिनांक १५ अक्टूबर २०२१ को रामेश्वरधाम मन्दिर पाकै, म.नं.एल ३/३२ के सामने, रेड रोज स्कूल के पीछे वाला गेट, विनय खण्ड-३, गोमती नगर में प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक आर्य समाज गोमती नगर द्वारा सम्पन्न किया गया। यज्ञ के पश्चात विद्वानों के प्रवचन हुए जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया। *(शिवधर मौर्य)*

२ अक्टूबर जिनका जन्म दिवस है

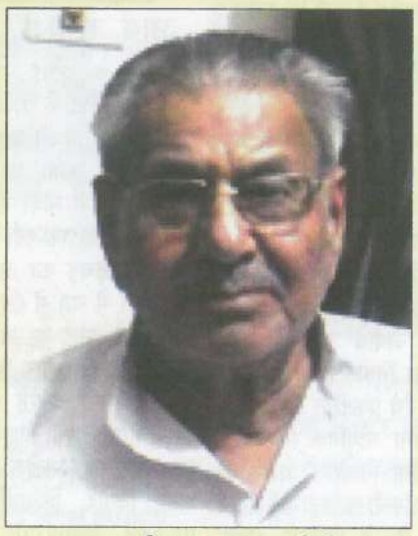

आचार्य आनन्द मनीषी
वेद मंदिर, राजाजीपुरम, लखनऊ

मंदिर वेद की साधना से
सत्कार्य बने आनन्द मनीषी।
तप त्याग विधान की भावना में
अनिवार्य बने आनन्द मनीषी।
प्रेम और ज्ञान की धारा बहा
शिरोधार्य बने आनन्द मनीषी।
आर्य बने स्वीकार्य बने
आचार्य बने आनन्द मनीषी।

वर्ष शतायु नये युग को
शुभ ज्ञान का पंथ दिखाते रहें।
राजाजीपुरम् के समाज में नित्य ही
ज्ञान छटा छिटकाते रहें।
एकता के सूत्र में बाँध हमें
संगच्छध्वं पाठ पढ़ाते रहें।
आर्य के लोक की वार्ता को
सहयोग से आगे बढ़ाते रहें।

—सम्पादक

आर्य समाज राजाजीपुरम, लखनऊ

आचार्य आनन्द मनीषी का जन्मदिवस २ अक्टूबर को प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इस वर्ष भी मनीषी जी का जन्मदिवस उल्लासपूर्वक सी-१२७१, राजाजीपुरम् 'मनीषी-भवन' में आयोजित हुआ। विशेष अतिथि वक्ता के रूप में आचार्य विश्वव्रत शास्त्री तथा डॉ.सत्यकाम आर्य ने आचार्य जी के व्यक्तित्व की विशेषताओं पर प्रकाश डाला तथा उनके सुन्दर स्वास्थ्य की कामनाएँ व्यक्त कीं। इस अवसर पर अच्छी संख्या में आर्यजनों ने उपस्थित होकर मनीषी जी के प्रति मंगल कामनाएँ व्यक्त कीं।

सतत क्रियाशील - निमिषा बाजपेयी

एक सुशिक्षित, समृद्ध और सम्पन्न परिवार की नारी के लिए, जिसे आर्थिक

दृष्टि से प्रयास करने की आवश्यकता ही नहीं होती, किसी सार्थक कला को विकसित करना और उसमें सिद्धि प्राप्त करना एक असम्भव नहीं तो कठिन कार्य अवश्य ही है। इस कठिन कार्य को सफल कर दिखाया है- श्रीमती निमिषा वाजपेयी ने।

निमिषा एम.बी.ए., बी.एड. करके सी.एम.एस. जैसे प्रतिष्ठित संस्थान में एक वर्ष तक शिक्षण कार्य करने के बाद अपने दो बच्चों- (पीहू)वेदांजलि एवं (चीकू)वेदांश की लामार्ट में पढ़ाई की समुचित व्यवस्था करने लगी। इधर उन्होंने अपनी क्रियाशीलता एवं रचनाधर्मिता को विकसित करने के उद्देश्य से बेकरी कला को अपनाया तथा 'बॉर्न एण्ड बेक्स' के नाम से इस दिशा में कार्य आरम्भ किया। निमिषा की केक-प्रणाली अत्यन्त शुद्ध, सुस्वादु एवं भारतीय शैली में होने, उपयुक्त स्थान पर आवश्यकता एवं मांग के अनुरूप समय पर पहुँचाने के कारण अच्छी ख्याति होने लगी। इससे प्रभावित होकर बीते दिनों 'इमेज टुडे' की रिपोर्टर आस्था श्रीवास्तव ने निमिषा का साक्षात्कार लिया और अपने चैनल पर प्रसारित किया। एक समृद्ध परिवार की नारी की रचनाधर्मिता का यह एक प्रेरक उदाहरण है। श्रीमती निमिषा वाजपेयी का सम्पर्क सूत्र इस प्रकार है-

इंस्ट्राग्राम हैंडल-BornandBaked_, व्हाट्स ऐप-7310119999
फेसबुक पेज-BornandBaked

जन्म दिवस की शुभकामनाएँ

'आर्य लोक वार्ता' की विशेष कार्याधिकारी श्रीमती निमिषा वाजपेयी का जन्म दिवस १२ अक्टूबर को है। इस अवसर पर 'योगाश्रम' अलीगंज से श्री पाल प्रवीण जी ने निमिषा जी को हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त की हैं। श्री पाल प्रवीण प्रति वर्ष श्रीमती निमिषा के जन्म दिवस के इस अवसर को नहीं भूलते और वे अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निर्देशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-638/181डी,
शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप,
पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9651333679

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 7310119999

प्रचार प्रमुख
श्री ओम चन्द शर्मा
: 8799521631

नवोन्मेष
श्री कृष्णा जी

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
सक्रिय सदस्य	–	200 रु. वार्षिक
विशिष्ट सदस्य	–	500 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	2,000 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	20,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	75,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-
बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं.-46900 1000 00651
खाते का प्रकार-बचत खाता

प्रतिष्ठापक
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार

संरक्षक
डॉ.भानु प्रकाश आर्य, लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा वेदाधिष्ठान 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।